ISSN : 2454-2121

सदीनामा

सोच में इज़ाफे की पत्रिका

वर्ष-17 ❐ अंक-07 ❐ 1 से 31 मई, 2017 ❐ पृष्ठ-16+8 ❐ R.N.I. No. WBHIN/2000/1974 ❐ मूल्य-5.00 रुपए

क्या दिशा लेगी भारतीय राजनीति

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में भाजपा की शानदार जीत के बाद, पार्टी ने योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री के पद पर नियुक्त किया है। योगी आदित्यनाथ ने न तो विधानसभा का चुनाव लड़ा था और ना ही भाजपा ने चुनाव प्रचार के दौरान उन्हें अगले मुख्यमंत्री बतौर प्रस्तुत किया था। योगी की नियुक्ति पर कई विपरीत प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं। इसका कारण साफ है। योगी, धर्म के नाम पर राजनीति के आक्रमक पैरोकार हैं। उनके विरुद्ध कई आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं। उन्होने नफरत फैलाने वाली कई बातें कही हैं और वे मीडिया में भी स्थान पाती रही हैं। लव जिहाद, घर वापसी और गोरक्षा जैसे मुद्दों पर उनके अभियान और भाषण समाज और मीडिया के एक बड़े तबके को अस्वीकार्य हैं।

भाजपा द्वारा योगी को, अन्य अपेक्षाकृत नरमपंथी नेताओं की तुलना में प्राथमिकता क्यों दी गई, जबकि यह भी साफ है कि योगी ने अपना जनाधार स्वयं निर्मित किया है और यह आरएसएस के जनाधार से भिन्न है। योगी, हिन्दू महासभा की विचारधारा में विश्वास करते हैं, जो कि आरएसएस की राजनीति से मिलती-जुलती तो है परन्तु कुछ मामलों में अलग भी है। उन्होंने अपना मुस्लिम विरोधी रुख कभी नहीं छुपाया। योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री बनाने के निर्णय से ऐसा लगता है कि आरएसएस और भाजपा के नेतृत्व का यह मानना है कि चुनाव नतीजों में धार्मिक ध्रुवीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विकास के मुद्दों को भी हिन्दुत्व से जोड़ दिया गया और हिन्दुओं को यह संदेश दिया गया कि अगर वे विकास के फल का स्वाद चखने से महरुम रहे हैं तो इसका कारण मुसलमानों का तुष्टिकरण है और यह भी कि केवल भाजपा ही हिन्दुओं का विकास कर सकती है। योगी ने स्वयं कैराना से हिन्दुओं के तथाकथित पलायन को कश्मीर घाटी से पंडितों के पलायन के तुल्य बताया था। भाजपा ने एक भी मुस्लिम उम्मीदवार को टिकट नहीं दिया और चुनाव नतीजों से जाहिर है कि भाजपा की मुस्लिम मतों को बांटने और हिन्दू मतों को एक करने की रणनीति सफल रही है।

योगी की नियुक्ति से यह भी स्पष्ट है कि अब आरएसएस और भाजपा, सांप्रदायिक कार्ड को और खुलकर खेलेंगे। उन्हें मुस्लिम मतदाताओं की कोई जरूरत ही नहीं है। उत्तरप्रदेश की लगभग 19 प्रतिशत मुस्लिम आबादी के वोट हासिल करने की भाजपा ने कोई कोशिश ही नहीं की। उनके वोट अखिलेश और मायावती के बीच बंट गए। यह भी साफ है कि संघ और भाजपा अब खुलेआम हिन्दू राष्ट्र का अभियान चलाएंगे। योगी ने स्वयं यह घोषणा की थी कि पूरे भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए पहले उत्तर प्रदेश को हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहते हैं। गुजरात कत्लेआम के बाद गुजरात को हिन्दू राष्ट्र की प्रयोगशाला बताया जाने लगा, तब भी योगी ने कहा था कि गुजरात के बाद, उत्तरप्रदेश हिन्दू राष्ट्र की प्रयोगशाला बनेगा।

मोदी-योगी राजनीति के उभार और भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने की धमकी का विपक्षी दलों के पास क्या जवाब है?

शेष पृष्ठ 21 पर

सम्पादकीय

मई दिवस और मजदूर दिवस

'मेक इन इंडिया' से हर चीज अपने देश में बनेगी और कारखानों और मजदूरों के दिन बहुरेंगे, यह उम्मीद बधी है। मजदूर दिवस आते ही मजदूरों के प्रति नीतियाँ, दशा-दिशा पर आंकलन जरूरी हो जाता है। अब सरकारों के सामने कारखानों को "नये भारत के तीर्थ" कहने या स्थापित करने की प्राथमिकता नहीं है। राज्य सरकारों ने कितने कारखाने लगाए या बेच दिये यह आंकलन करना एक बात है उसी तरह जैसे यह कहना कि सरकारी होते ही कारखाने बीमार से बीमार और उनको बीएफआईआर की बीमारी लग जाती है। पुराने कारखानों के स्थानों पर आवासीय कालोनियाँ बनना एक आम बात है। हमारे कोलकाता में बेंगाल पोटरी से बात शुरू होकर बाटा कम्पनी होते हुए तमाम कारखानों की आत्माओं ऊपर आवासीय परिसर उग आए हैं। हमारी नीतियाँ क्यो हों ? कैसे लागू हो ? कैसे चल रही है। इन पर बात करके हम छोटा नहीं होना चाहते। आज बंगाल की सरकार कथित तौर पर वामपंथी भले ही नहीं पर इसकी नीतियाँ अति वाम हैं और अति दक्षिण भी। पर कारखानों को खोलने/खुलवाने की कोई नीति जनमानस तक नहीं पहुँच रही। अब देश का कोई उत्पादन क्षेत्र मजदूरों के लिए सुरक्षा की गारंटी नहीं देता ना नये क्षेत्र के विकास का। सरकारी क्षेत्रों के उत्पादन का खर्च घटाने की जब बात होती है मजदूरों की ओवरटाइम या संख्या घटाने की बात तुरंत जीभ पर आ जाती है पर अनुसंधान/विकास बेहतर मार्केटिंग जैसे क्षेत्रों पर हम कम सोच पाते हैं। अबका मजदूर पढ़ा लिखा है उसको हर चीज का ज्ञान है और अपने मालिक की हर मंशा को समझता भी है। यही समय है हम अपनी नीतियाँ प्रो-मजदूर करें तभी मई दिवस और मजदूर दिवस की सार्थकता होगी "दुनिया के मजदूर एक हों" नारे को दुनिया के मजदूरों की चुनौतियाँ समाप्त हों भी कहा जाना चाहिए।

सदीनामा को सिर्फ आप तक पहुँचा कर ही हमें संतोष नहीं, आप कोलकाता आएं

- परीक्षा केन्द्र बनाएं
- भयंकर बीमारी की चेकिंग/इलाज
- भ्रमण : गंगासागर/सुन्दरवन
- पुस्तक का प्रकाशन
- सेमिनार का आयोजन
- कोई भी शोध कार्य बस एक महीना पहले सम्पर्क करें।

यह नि:शुल्क नहीं है

हमें लिख भेजे– **मिनाक्षी सांगानेरिया**

संपादक मण्डल

उप-संपादक	:	**तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य**
संपादकीय सलाहकार:		**यदुनाथ सेउटा**
संपादक	:	**जितेन्द्र जितांशु**
विशेष सहयोग	:	**आरती चक्रवर्ती, एच॰ विश्ववाणी तथा राजेन्द्र कुमार रुईया (अमेरिका) सभी अवैतनिक हैं।**

पत्राचार का पता :

सम्पादक - सदीनामा

48/49A, Swiss Park,

Kolkata-700 033

West Bengal. India

☎ : 9231845289

E-mail : jjitanshu@yahoo.com

पुस्तक समीक्षा

निर्मला तोदी के काव्य संग्रह "सड़क मोड़ घर और मैं" का लोकार्पण

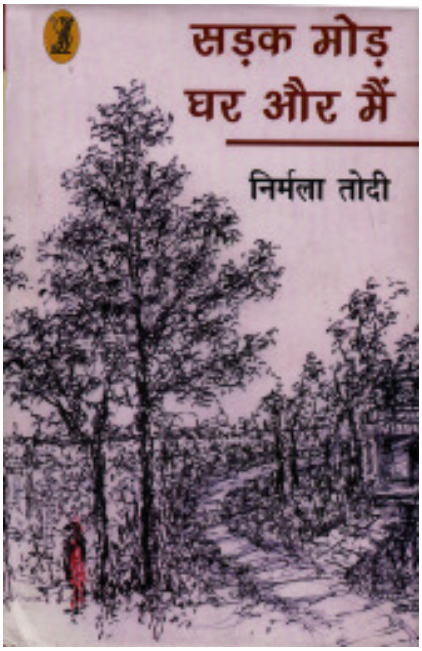

22 जनवरी 2017, भारतीय भाषा सभागार में केदारनाथ सिंह ने पुस्तक का लोकार्पण किया। निर्मला जी ने कहा- यह मेरा सौभाग्य है कि केदारनाथ सिंह के द्वारा जो कि ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं ऐसे कविवर के हाथों मेरी पुस्तक का लोकार्पण हुआ। मंच पर आसीन राजश्री शुक्ला शम्भुनाथ तथा वेदरमण, संचालन ममता पाण्डे ने किया जो की सराहनीय था। पलक और सलोनी ने माँ सरस्वती की वंदना करके कार्यक्रम की शुरूआत की। विमलेश जी ने निर्मला जी की कविता को स्त्रीवाद से अलग कहा जबकि वेदरमणजी ने मिर्मला जी की कविता को स्त्रीवाद की कविता कहा। यह सम्पूर्ण से स्त्रीवाद कविता है जहाँ मैं और खटाऊ पर जो है पूरी कविता स्त्रीवाद को स्वीकारते हुए लिखती हैं। राजश्री शुक्ला ने 'जननी' और 'लोहे के ट्रंक' में स्त्रीवाद पूरी तरह झलकता है। शम्भुनाथ जी ने कहा कवि कई होते हैं अपना कवि, कवि खुद होता है। केदारनाथ सिंह जी ने 'कान' पर लिखी कविता का जिक्र किया। कहा यह कविता अद्भुत है जो आप अपने कान से भी बातें कर रहे हो। आज तक कविताएं कई लिखी गई लेकिन कान पर आज तक कविता नहीं लिखी गई। उन्होंने कहा इन्होंने पहले संग्रह से इस संग्रह को बहुत ही सुन्दर लिखा है इसके बाद और भी जो संग्रह होंगे वे और भी सुन्दर होंगे इसके लिए वे निर्मला तोदी को बधाई देते हैं। वहाँ उपस्थित रचनाकारों में अभिज्ञात, कुसुम खेमानी, रितेश पाण्डे, मनोज पाण्डे, डॉ० संजय जायसवाल, संजय राय, अनिता राय आदि थे।

सदीनामा के लिए यह रपट मिनाक्षी ने लिखी

अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान
सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है
SADINAMA
Current Account No. 03771100200213
PUNJAB AND SIND BANK
IFSE CODE : PSIB0000377
Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)
Phone No. For SMS To Inform - 09231845289
PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS

विशेष

आएं थोड़ी मूर्खता कर लें

1 अप्रैल को मूर्खता दिवस मनाया जाता है। हमारे देश में मूर्खताएं करना, मूर्ख बनाना, मूर्ख बने रहने का सुख लेना साधारण सी बातें हैं। इस बार मूर्खता दिवस के दिन हमने कोलकाता के प्रमुख अखबारों को चुना। पत्रकारिता कभी मिशन थी फिर कमीशन, फिर कुछ और आज के दिन सिर्फ इसकी मूर्खता पर बात करते हैं। इसके लिए हमने छह लोगों की टीम बनाई, हरेन्द्र पाण्डेय (हावड़ा) आर०के० शर्मा (व्यंग्य कवि, कोलकाता) छात्रा रिंकू यादव (कोलकाता), पूजा मिश्र (आकाशवाणी), पापिया भट्टाचार्य तथा मैं खुद। पहले के तीन लोगोने तो तुरंत लिखा बाकी तीन का तारतम्य ही बन पाया। नतीजा आपके सामने है। आप भी इस मूर्खता को उदारता से लेंगे इसी उम्मीद के साथ– **सम्पादक**

(1).

सम्पादक महोदय ने मेरे पास 'मूर्ख दिवस' पर प्रकाशित हिन्दी अखबारों का बंडल भेजकर आदेश प्रेषित किया– "मूर्खतापूर्ण खबरों का चयन करके **सदीनामा** वार्षिक मूर्ख प्रतियोगिता का सहभागी बनिये।"

सो उसी क्रम में एक-एक अखबारों से चुने हुए खबरों की बानगी देखिये–

1. राजस्थान पात्रका

"जस्टिस कर्णन बोले– अब कोर्ट में पेश नहीं होऊँगा चाहे जेल भेज दो।

महामहिम से तो यही अपेक्षा की जा रही है ताकि वे कोर्ट जाकर अनाप-सनाप आदेश पारित न कर सकें। वैसे भी उन्हें आगरे जाने की आवश्यकता है। दिलचस्प बात है कि आगरा में जेल भी है।

2. सन्मार्ग

"गायकवाड ने की दूसरे नामों से उड़ान भरने की तीन कोशिशें"

अब मान्यवर सांसद ही हैं तो 3-4 परिचय पत्र बनवाया ही होगा। नेताजी ने भी तो नजरबंदी के दौरान छद्म वेश में पलायन किया था।

लालू प्रसाद यादव आचार्य श्री महाश्रमण के दर्शनार्थ पहुँचे कहीं आदित्यनाथ तक पहुँचने का पथ तो नहीं ढूढ़ रहे लालूजी। क्योंकि योगीजी के मुख्यमंत्री बनने के बाद गोरखनाथ मठ का कोई प्रमुख तो होना चाहिए।

3. समाज्ञा

हाँ, यह अखबार भी कलकत्ते से निकलता है। "एनएच से 500 मीटर के दायरे में अब नहीं बिकेगी शराब।"

आगे से ध्यान रखना होगा। घर से निकलते वक्त अपना इंतजाम करके चलना ही बुद्धिमानी है। ट्रक के पीछे शेर कुछ इस तरह लिखा जाएगा–

"चलते चलते मेरी ये बात याद रखना
कभी खाली हाथ न चलना, अब रस्ते में नहीं मिलता।"

"अंडरवर्ल्ड डॉन से परेशान शहाबुद्दीन ने तिहाड़ में की टी.वी. की मांग–

तिहाड़ जेल में कैद पूर्व सांसद और बाहुबली नेता शहाबुद्दीन अंडरवर्ल्ड डॉन छोटा राजन से परेशान हैं।

बुद्धिजीवियों के लिए Dabate का नया Topic बाहुबली बड़ा या अंडरवर्ल्ड डॉन।

राज्यसभा में मनोहर परिकर ने दिग्विजय सिंह को कहा शुक्रिया, बोले आप घूमते रहे हमने सरकार बना ली। अब गोवा तो गोवा है ही वह भी दिग्विजय जी की शादी हुए तो कुछ दिन हुए हैं।

4. सलाम दुनिया

"सफल होने पर प्यार दुर्लभ हो जाता है।"– विक्रम भट्ट

यह तो उल्टी गंगा बहाने जैसा है। हम तो विजय मान्या के उन दिनों को याद करते हैं जब वे कैलेण्डर शूटिंग कर रहे होते थे

---

(2)

एक अप्रैल यानि अप्रैल फूल डे, मूर्ख बनाने का दिवस वैसे तो कुछ लोग और हमारे कर्णधार रोज ही जनता को अप्रैल फूल बनाते आ रहे हैं। अनायास विचार आया कि प्रजातंत्र के चौथे स्तम्भ कहे जाने वाले अखबार भी क्या जनता को आज फूल यानि मूर्ख बना रहे हैं? तभी दो अखबार खरीदे और उन्हें पढ़ डाला।

प्रथम दैनिक सन्मार्ग, मूल्य चार रुपये, बाहर पृष्ठ।

प्रथम पेज : सिर्फ 7 खबरे और आधा पृष्ठ विज्ञापन को समर्पित।

द्वितीय पृष्ठ : **मेट्रो** पेज कोई सम्पादकीय नहीं, पाँच खबरे, आज के कार्यक्रम सुडोकू, दिमागी कसरत आदि।

तृतीय पृष्ठ : **महानगर** में सिर्फ दो खबर और बाकी पेज सारा विज्ञापन की भेंट, मानो पूर्व दिन शहर में कोई घटना और कार्यक्रम हुए ही नहीं।

चतुर्थ पृष्ठ : हावड़ा शोक उठावणा विज्ञापन मृत्यु संदेश और अन्य मिश्रित 12 खबरें जैसे हावड़ा भी पूर्व दिन शांत और घटना, कार्यक्रम रहित रहा हो।

पंचम पृष्ठ : कोलकाता में सिर्फ दो समाचार और पूरा पेज विज्ञापन की भेंट।

छठा पृष्ठ : बंगाल में सिर्फ आठ खबरे और बाकी सारा पेज विज्ञापन।

सातवां पृष्ठ : पर ग्यारह देश विदेश की खबरे और आधा पेज से ज्यादा विज्ञापन।

आठवां पृष्ठ : चौथा स्तम्भ में करपात्री जी के मुख से, ओशो, धार्मिक चर्चा और छोटा सा स्थान पाठकों की कलम से सिर्फ दो पाठक के विचार पृष्ठ की सामग्री चौथा स्तम्भ से बिलकुल भी मेल नहीं खाती है।

नवम पृष्ठ : पूरा फूल पेज स्वच्छ इंधन के रंगीन विज्ञापन से भरा हुआ।

दसवां पृष्ठ : यूपी-बिहार के नाम से सिर्फ पांच खबरे मानो योगीजी और नीतिश जी के बाद दोनों राज्य बिल्कुल सुधर गये हों और बाकी आधे से ज्यादा पेज पर विज्ञापन।

ग्यारहवां पृष्ठ : बिजनेस के अन्तर्गत सिर्फ 10 खबरें और विज्ञापन।

बारहवां पृष्ठ : स्पोर्ट्स में पूरी स्पोर्ट्स की खबरें नहीं सिर्फ छोटी-छोटी आठ खबरें और बाकी सारा पृष्ठ विज्ञापन से भरा हुआ। पूरे अखबार का अवलोकन करने से यह आज का अखबार कम विज्ञापन का पर्चा अधिक लगता है। कई वर्गों और खबरों की उपेक्षा है। जनगण के बजाय धनी जन पर ज्यादा फोकस है। आज के दिन को सार्थक करते हुए जनता को फूल बना रहा आज का अखबार।

अब बात करते हैं द्वितीय पत्र दैनिक राजस्थान

पत्रिका की मूल्य चार रुपये पृष्ठ चौदह।

प्रथम पृष्ठ ग्यारह खबरें और एक विज्ञापन

द्वितीय पृष्ठ युवा में राष्ट्रीय 20 खबरें और प्रथम पृष्ठ का शेषांश कोई विज्ञापन नहीं।

तृतीय पृष्ठ : कोलकाता की सभा संस्था की 14 खबरें और विज्ञापन

चतुर्थ पृष्ठ : कोलकाता छः खबरें, राशिफल, नमस्कार कोलकाता, लोककथा, पंचांग आदि कोई विज्ञापन नहीं।

पंचम पृष्ठ : हावड़ा पृष्ठ में अठारह खबरें लेकिन एक भी हावड़ा की खबर नहीं, हावड़ा के नाम पर सारी अन्य जगह की खबरें छापकर अखबार ने हावड़ा की जनता और पाठकों को अप्रैल फूल बनाया। चार विज्ञापन सरकारी भी साथ में छापे गये।

षष्ठ पृष्ठ : पत्रिकायन में महापुरुषों की बातें, अन्तर्राष्ट्रीय खबर, टिप्पणी, आलेख, उपन्यास के अंश, व्यंग्य, सम्पादकीय, भूत-भविष्य की बातें आदि और बहुत ही छोटा स्थान पाठक पीठ- सिर्फ एक पाठक का पत्र कोई विज्ञापन नहीं

सप्तम पृष्ठ : राजस्थान राजस्थान से जुड़ी 15 खबरें और छोटे-छोटे क्लासीफाइड विज्ञापन

अष्टम पृष्ठ : स्पोर्ट्स में स्पोर्ट्स से जुड़ी 22 खबरें, स्पोर्ट्स खबर के साथ पूरा न्याय। कोई विज्ञापन नहीं।

नवम पृष्ठ : अराउंड में देश विदेश की 23 खबरें कोई विज्ञापन नहीं।

दशम पृष्ठ : me next के नाम से प्रकाशित इस पेज में ज्ञानवर्द्धक और लाभप्रद लेख हैं। कोई विज्ञापन नहीं। करियर-बिजनेस नौकरी Job desk, Skill आदि से जुड़ी।

एकादश पृष्ठ : Education मेरी शिक्षा दीक्षा से समसामयिक प्रश्न उत्तर, ज्ञानवर्द्धक बातें, नये कोर्स की जानकारी संस्थान की जानकारी, knowledge corner में सामान्य ज्ञान यानि पूरा पृष्ठ शिक्षप्रद बातों से भरा हुआ कोई विज्ञापन नहीं।

द्वादश पृष्ठ : मेरा काम मेरी जिन्दगी - नये नये बिजनेस के गुर शिक्षाप्रद आलेख moral mantra, सफल entreprenur tips, golden quotes, success factor आदि ज्ञानवर्द्धक बातें कोई विज्ञापन नहीं।

त्रयोदश पृष्ठ : Tool Box, मेरे मददगार, आनलाइन टूल्स की जानकारी Tech गुरु, माइंड इट, learning english, New technology, social media की जानकारी पूरे पेज में काफी लाभप्रद, कोई विज्ञापन नहीं।

चतुर्थदश पृष्ठ : अन्तिम पृष्ठ पर भी कोलकाता से जुड़ी खबरें पूरे पृष्ठ पर कोई विज्ञापन नहीं।

सिर्फ अखबार ने हावड़ा वालों को फूल बनाया लेकिन कोलकाता वासी के साथ पूरा-पूरा न्याय किया है। कंटेट ज्यादा है लेकिन कई वर्ग क्षेत्र छूटे हुए हैं। दोनों अखबारों में राष्ट्रीय क्षेत्रीय खबरें लगभग मिलती हैं लेकिन अभी भी कई वर्गों और क्षेत्रों की उपेक्षा अखबार में कमी दिखाई पड़ती है। अखबार अपनी मूल आत्मा और जनदायित्व भागीदारी से दूर दिखाई पड़ रहे हैं।

किसी ने कहा था कि **हुक्मरानों को खबर नहीं शहर के हालात की 2 रुपये का अखबार खबर रखता है हर बात की।** यह बात अब असत्य साबित हो रहा है। सभी अखबार धनोपार्जन में लगे हुए। चौथे स्तम्भ का दायित्व नहीं निभा रहे।

(3)

रोजगार संबंधित सूचना

मेरा नाम रिंकु है। मैं एक छात्रा हूँ। नियमतः रोजाना मैं अखबार पढ़ती हूँ। भारत एक नजर, प्रभात खबर, युवा शक्ति अखबारों को पढ़ती हूँ। इन सारे अखबारों में मैंने पाया कि कहीं भी रोजगार संबंधित सूचना विस्तारपूर्वक नहीं छापी गई है। मैं यह चाहती हूँ कि क्यों न इन अखबारों में रोजगार संबंधित सूचना छपे अगर ऐसा होता है तो हम इन अखबारों से रोजगार संबंधित सूचना आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। इन सूचनाओं के लिए हमें अलग से रोजगार समाचार अखबार नहीं खरीदने पड़ेंगे।

विशेष

महिला सशक्तिकरण

एक महिला होने के नाते मेरा यह विचार है कि इन अखबारों में महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को लेकर कुछ छपे। अधिक से अधिक लोग उसे पढ़े। आखिर नारी की अवहेलना की दृष्टि से कब तक देखेंगे। कुछ लोग आज नारी पुरुषों का बोझ नहीं बल्कि पुरुष के साथ कधें से कंधा मिलाकर काम करती है प्रत्येक क्षेत्र में सक्रिय हैं। अगर अखबारों में महिला सशक्तिकरण को लेकर कुछ अनुच्छेद छपे तो मुझे पढ़ने में अत्यधिक आनंद की अनुभूति होगी। हमारे देश को अगर विकसित करना है तो महिलाओं को सशक्त बनाना होगा। समाज में वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनना ही पड़ेगा।

(4)

– ....और दस दिन बाद

आज कोलकाता के जनसत्ता, प्रभात खबर, सन्मार्ग, राजस्थान पत्रिका को देख रहा हूँ पर अपने जन्मदिन पर दुनिया को बदलने का संघर्ष करने वाले राहुल सांस्कृत्यायन को इस बाजारू समय में कौन और क्यों कोई याद करे... कोलकाता के सारी साहित्यिक संस्थाएं, लेखक संगठन और वामपंथी पार्टियाँ चुप हैं। राहुलजी ने अपनी आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' में पालिभाषा का एक संदेश उल्लेख किया है जिसका भावार्थ इस प्रकार है – "हे धम्म, हे भिक्षुकों, नाव के समान यह धर्म मैं पार उतरने के लिए दे रहा हूँ। पार उतर जाने के बाद उसे पकड़े रहने और बोझ बनाकर ढोने के लिए नहीं। आजमगढ़ का ब्राह्मण परिवार का यह लड़का वेदपाठी, महंती, बौद्ध भिक्षुक बनते, चोला उतारते अंग्रेजी, सामन्तों से लड़ते भारतीय साम्यवाद का चितेरा बनता है और गंगा से वोल्गा तक वह ऐसी चिंगारी फैलाता है जहाँ धर्म जाति की क्षय का जनगान करते नवजागरण का संदेश देता है। नारायणी साहित्य अकादमी की बंगाल इकाई की ओर से दिमागी गुलामी को दूर करने वाले और मनुष्य का जयगान करने वाले राहुलजी की क्रांतिकारी विरासत का अभिनंदन

–ब्रजमोहन सिंह
समीक्षक, नई पुस्तक स्तम्भ सदीनामा

गजल

अजीब क्यूं ना लगे बात उस दीवाने की
जमाने से जो शिकायत करे जमाने की

अग वो रूठना चाहें तो शौक से रूठें
हमें भी आती है तरकीब उन्हें मनाने की

मिला के हाथ निभाते हैं लोग रस्मों को
कोई तो बात करे दिल से दिल मिलाने की

बहार में तो सभी फूल मुस्कराते हैं
ख़ेंज़ाँ में कीजिए कोशिश बहार लाने की

करीब आएं कदम से कदम मिला के चलें
कभी ना बात करो हमसे दूर जाने की

हँसी है रात चलो दिल से दिल की बात करें
जरूरत है हमें दुनियां को भूल जाने की

है मेरी फिकर का तोहफा मेरी गजल अंखतर
सदा ही करता हूँ कोशिशें गजल सुनाने की

–यूसुफ अखतर
राजाबाज़ार, नारकेल डांगा
कोलकाता-22

सम्मेलन

भारतीय बौद्धों की आवाज

भारतीय बौद्ध धम्म दर्शन सोसाइटी एवं अनुसंधान केन्द्र, चन्द्रमणी बुद्धबिहार, बरेली, उत्तर-प्रदेश की ओर से बौद्ध संगठन की राष्ट्रीय समन्वय समिति, बुद्धगया (भारत) के राष्ट्रीय संगठन श्रद्धेय ए.आर. गौतम को चन्द्रमणी बुद्धबिहार बरेली में आयोजित बोधिसत्व भारतरत्न बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी के 126 वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर एडवोकेट ज्ञानेन्द्र सिंह मौर्य अध्यक्ष एवं श्रद्धेय जे. आर. संत, महासचिव भारतीय बौद्ध धम्म दर्शन सार सोसायटी एवं अनुसंधान केन्द्र के कर कमलों के द्वारा श्रद्धेय आर. गौतम को सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में उल्लेखनीय एवं उत्कृष्ट कार्यों के फलस्वरूप "संघनायक" का सम्मान-पत्र देकर एवं शाल उड़ाकर सम्मानित किया,

श्रद्धेय आर. गौतम ने यह सम्मान अपने धम्म गुरु संघराज डॉ० भिक्षु सत्यपाल महाथेरों को समर्पित किया। बौद्धों की समस्याओं के उन्मूलन एवं उनके संवेधानिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए "भारतीय बौद्ध संगठनों की राष्ट्रीय समन्वय समिति, बुद्धगया (भारत) के तत्वाधान में स्थापित "राष्ट्रीय बौद्ध धम्म संसद बुद्धगया" के माध्यम से किये जा रहे प्रयासों के फलस्वरूप वर्ष 2014 में 'लार्ड बुद्धा ट्रस्ट, नई दिल्ली के चेयरमैन अमरविसारथ एवं पूज्य भिक्षु धम्मानंद महाथेरा के कमलों द्वारा श्रद्धे, ए.आर. गौतम को "धम्मनायक की उपाधि से देकर सम्मानित किया जा चुका है।"

बौद्ध संस्थाओं द्वारा निरंतर सम्मान किये जाने को लेकर श्रद्धेय ए.आर. गौतम अपनी कार्य क्षमता, कर्तव्य निष्ठा के साथ प्रत्येक जिले से गाँव तक पांच-पांच बौद्ध कार्यकर्ताओं के शाखा बनाकर पंचशील अभियान के अंतर्गत बौद्धमाय भारत बनाने में जुटे हुए हैं। बौद्धों की स्वतंत्रता संवेधानिक पहचान, बौद्ध विवाह मान्यता कानून, बुद्धबिहार मोनेस्ट्री एक्ट, एरं संविधान की धारा 25 की उपधारा 2 खंड (ब) की व्याख्या में संशोधन उनके मुख्य मुद्दे हैं। संविधान की धारा 25 को लेकर सुप्रीम कोर्ट नई दिल्ली ने याचिका दायर की है।

– एडवोकेट विनय कुमार

Buddha Kutir
284/C-1, Street No 8
Nehru Nagar, New Delhi-110008
Mobile : 98998537
E-mail : aggautam048@gmail.com

केन्द्रीय सिल्क बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में स्वच्छता पखवड़ा का उद्घाटन

1मई, 2017 केन्द्रीय सिल्क बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में स्वच्छता पखवाड़ा का उद्घाटन आर०भट्टाचार्य, भूतपूर्व संयुक्त सचिव (तकनीकी) ने किया। पी० मोदक, सहायक निदेशक (निरी०) क्षे० कार्या० (के०रे० बोर्ड) ने अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस पर प्रकाश डालते हुए अगले कई दिनों के कार्यक्रम के बारे में बताया। यह पखवाड़ा 1 मई से 15 तक चलेगा। कार्यक्रम की समाप्ति विवेक कुमार सहायक सचिव (तकनीकी), क्षे०का० कोलकाता के धन्यवाद ज्ञापन से हुई।

विज्ञापन दरें :

पूरे देश के लिए एक समान

साईज		रु०
पूरा पेज	-	8000
आधा पेज	-	5000
एक चौथाई	-	3000

1 कॉ. × 1 से.मी. 250

व्यंगोत्सव

गोवा में दो दिन का व्यंग्योत्सव सम्पन्न

राज्यपाल मृदुला सिन्हा गोवा को रचना कुटीर बनाने हेतु औपचारिक प्रस्ताव देंगी।

मनमोहन सरल को साहित्य और कला के लिए मिला "वाग्धरा जीवन गौरव सम्मान"

गोवा में मडगांव स्थित पार्वती बाई चैगुले कॉलेज के हाल में वाग्धारा, व्यंग्य यात्रा और विंध्य न्यूज नेटवर्क के सौजन्य से व्यंगोत्सव का आयोजन 17 और 18 मार्च को सम्पन्न हुआ। डॉ० वागीश सारस्वत का संयोजन तथा कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ० सांवत और हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ० त्रिपाठी तथा हिन्दी के विद्यार्थियों के योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता।

हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर आए दिन विचार-विमर्श, विमर्श, गोष्ठियाँ, आयोजन होते रहते हैं, लेकिन केवल व्यंग्य को लेकर इस तरह का आयोजन वह भी गोवा जैसे अहिन्दी भाषी क्षेत्र में होना गौरव की बात थी। जिसमें इतने सारे व्यंग्यकारों, व्यंग्य पर गहरी पैठ रखने वाले सम्पादकों/पत्रकारों को आमंत्रित किया गया था।

मराठी के प्रख्यात अभिनेता किशोर कदम ने गोवा व्यंग्य महोत्सव का उद्घाटन किया। किशोर कदम ने शरद जोशी की व्यंग्य रचनाओं की एक घंटे की विशेष प्रस्तुति भी की।

व्यंग्य महोत्सव में भाग लेने वाले लालित्य ललित, कृष्णकुमार आशु, सुभाष काबरा, सुनीता शानू, श्रवण कुमार उर्मिलिया, विवेक मिश्र, राजेन्द्र सहगल, अलका सिगतिया, सन्देश त्यागी, अरुण सहरिया, देवकिशन राजपुरोहित, शशि किरण मीना अरोड़ा, राकेश पांडेय, संजीव निगम, रमाकांत ताम्रकार, रमेश सैनी, सुधीर शर्मा, गोपी बूबना, संगीता कुमारी, रामकिशोर उपाध्याय, डॉ० सूरत ठाकुर, विद्यासागर आदि अनेक जाने माने लेखकों ने अपने व्यंग्य तथा कविताओं के माध्यम से कार्यक्रम को गति प्रदान की।

राज्यपाल मृदुला सिन्हा द्वारा इस समारोह में वरिष्ठ लेखक और कला समीक्षक मनमोहन खन्ना सरल को उनकी साहित्य साधना के लिए वाग्धारा जीवन गौरव सम्मान प्रदान किया जाना था परन्तु साहित्यकार मनमोहन सरल मडगांव रेलवे स्टेशन पर दुर्घटना का शिकार हो गये, उन्हें सर्जरी के लिए तत्काल मुम्बई भेजा गया। उनके लिए जीवन गौरव सम्मान मुम्बई के गीतकार अरविन्द राही ने राज्यपाल के हाथों से स्वीकार किया।

डॉ प्रेम जनमेजय को मृदुला सिन्हा ने जन्मदिन की बधाई देते हुए व्यंग्य में उनके योगदान को सराहा। इस अवसर पर वरिष्ठ व्यंग्यकार डॉ० सूर्यबाला ने कहा कि व्यंग्य साहित्य में सबसे ज्यादा लोकप्रिय विधा है।

समापन समारोह में राज्यपाल ने रश्मि पटेल, स्नेहा चौरसिया, दृष्टि अरोड़ा, सुष्मिता पैकाणे और लक्ष्मी को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। गम्भीर समाचार के सम्पादक अजय मोहता, चौगुले कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ० नन्दकुमार सावंत, ओमप्रकाश त्रिपाठी विशेष अतिथि के तौर पर मौजूद थे।

इतने सारे व्यंग्यकारों/पत्रकारों/सम्पादकों को संभालने और उनका इंतजाम करने तथा उन्हें ससम्मान संतुष्ट करने का जिम्मा डॉ० वागीश सारस्वत तथा डॉ० लालित्य ललित का था, थोड़ी बहुत कमियों को दरकिनार कर दिया जाये तो वे काफी हद तक सफल भी रहे।

उपस्थित सभी व्यंग्यकारों ने अपनी पुस्तकों की दो-दो प्रतियां पार्वती बाई चौगुले पुस्तकालय में जमा की। इस समारोह में व्यंग्य चालीसा, उत्कृष्ट व्यंग्य रचनाएं, विलायतीराम पांडेय, भ्रष्टाचार के सैनिक, कैमूर टाइम्स विशेषांक, छत्तीसगढ़ मित्र आदि पुस्तकों का लोकार्पण राज्यपाल मृदुला सिन्हा के कर कमलों द्वारा हुआ।

राज्यपाल ने व्यंग्य को विनोद का विषय कहा कि जो लेखक खुद पर हंसने की क्षमता रखता है वो ही व्यंग्यकार हो सकता है। इस अवसर पर राज्यपार मृदुला सिन्हा ने रचना कुटीर का निर्माण करने का एलान किया, और इस पूरे आयोजन के लिए पार्वती बाई चौगुले कॉलेज को धन्यवाद दिया।

लम्बी कहानी

रजाई

मूल : वीना वर्मा ● अनुवाद : सुभाष नीरव

एक कहानी दो अनुवादक एक घटना और पाठक :

इस कहानी का अनुवाद कई वर्ष पहले पढ़ा था। अनुवादिका सदीनामा के सम्पादक मण्डल में थीं। यह कहानी बराबर मेरे दिमाग में गूंजती रही। हमने इसे अपने पाठकों तक पहुँचाने का निर्णय लिया तो कहानी खोजने से नहीं मिली। लंदन में तेजेन्द्र जी से सम्पर्क किया तो उन्होंने सुभाष जी का नाम सुझाया। सुभाष दी ने तुरंत अनुवाद भेजा और अब आपके पास है, आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा। **– सम्पादक**

वह मुँहस-सिर लपेटे पड़ी थी। सुबह के ग्यारह बज गए थे। दिन पूरा चढ़ आया था, पर उसने रजाई मुँह पर से नहीं उतारी थी। उसकी बहू कैथी कई बार आकर उसका मुँह नंगा करके देख गई थी कि कहीं बुढ़िया मर तो नहीं गई। लेकिन उसकी साँस चलती देखकर वह फिर से रजाई उसके मुँह पर दे देती। सुबह करीब नौ बजे उसने उसको जगाकर चाय के लिए पूछा था, पर हर बार हरबंस कौर ने 'न' में सिर हिलाया और करवट बदल ली थी।

कैथी उसको अधिक कुछ कहती भी नहीं थी। दोनों की जुबान का भिन्न होना इसका कारण था। कैथी कहती कुछ और हरबंस कौर के पल्ले कुछ और ही पड़ता। यद्यपि हरबंस कौर को इंग्लैंड में आए कोई बीस बरस हो गए थे, पर अंग्रेजी जुबान से वह कोरी थी। बेटी और बहू अंग्रेजी में गिटपिट करते तो उसके पल्ले कुछ न पड़ता। जब कैथी उसके साथ कोई बात करती तो वह बात को समझे बगैर 'जैस जैस, नो नो' कह देती। और इस 'जैस जैस, नो नो' ने कई बार घर में क्लेश खड़ा कर दिया था।

कैथी का नया नया विवाह हुआ था, उसके पुत्र सतबीर के साथ। एक दिन वह घर की सफाई करती हुई हरबंस के कमरे में आ गई। हरबंस कौर गुरुद्वारे गई हुई थी। कैथी ने कमरा साफ किया और अपनी सास का पुराना बिस्तरा उठाकर वहाँ नया बिछा दिया तथा जगह जगह से फटी-घिसी उसकी रजाई उठाकर कूड़ा फेंकने वाले काले बैग में डाल दी। हरबंस कौर वापस लौटी तो अपने कमरे का नया रूप देखकर हक्की-बक्की रह गई।

"मी नो रजाई?" वह बहू की तरफ मुड़ी।

"यस मम्म, यू डोंट नीड दैट रैग ऐनी मोर। दैट इज टू ओल्ड। आय ब्रोट दिस न्यू ब्लैंकट फॉर यू...।" कैथी ने सास को बैड पर पड़ा नया गरम कम्बल हाथों में लेकर दिखाया।

"नो कंबल...। मी रजाई...।" वह बच्चों की तरह रोने लग पड़ी।

"व्हट हैपेंड? वाय आर यू क्राइंग?" कैथी घबरा गई।

"नो नो मी रजाई...।" वह रोती हुई बाहर चली गई। कैथी घबराई हुई उसके पीछे पीछे दौड़ी।

हरबंस कौर घर के आगे पड़े कूड़े-कचरे बैगों में से अपनी रजाई निकाल लाई। बैड पर पड़ा कम्बल उसने इकट्ठा करके कारपेट पर रख दिया। कैथी को हरबंस की इस हरकत पर अपना अपमान होता प्रतीत हुआ तो उसने गुस्से में रजाई हरबंस कौर के हाथों से खींची।

"दिस इज़ वैरी डर्टी... नोट गुड फॉर युअर हैल्थ...।" वह चीखी।

"नो नो... सतबीर...सतबीर... रे सत्ते! हरबंस कौर ने शोर मचाया।

"क्या हुआ मम्म?" सतबीर दूसरे कमरे में से दौड़कर आया। हरबंस कौर रजाई के ऊपर बिछी पड़ी थी और कैथी उसको एकतरफ धकेल कर रजाई उसके नीचे से खींचने का यत्न कर रही थी।

"रे बेटा... मेरी रजाई...।" सतबीर से हरबंस कौर की आँखों में आए आँसू देखे न गए।

"हाऊ यू डेअर्ड ?" उसने कैथी के सुनहरी बाल हाथों में पकड़कर खींचे और पूरे जोर से दो थप्पड़ उसके मुँह पर जड़ दिए।

"व्हट्स रोंग विद यू ?" कैथी दंग रह गई।

"डोंट ट्रीट माय मदर लाइक ए..... यू बिच...।" वह अपनी माँ को फर्श पर से उठाता हुआ नफ़रत से कैथी की ओर देख रहा था।

"आय वाज जस्ट क्लीनिंग हर रूम।" कैथी की भूरी आँखों में बादल तैरे।

"डोंट टच हर थिंग्ज। लैट हर लिव एज द्रा.. लाइक।" वह कैथी पर गुस्से से बरस रहा था।

"हाऊ द्रा.... कैन लिव इन सच ए डर्टी रूम ? एंड हाऊ वी कैन लिव विद हर ?" वह अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर सकी थी कि सतबीर ने उसके बाल पकड़कर खींचे।

"दैन गो टू हैल...। आय एम गोइंग टू लिव माय मदर इन दिस डर्टी प्लेस। यू गैट लॉस्ट।" उसने फिर थप्पड़ उठाया, पर हरबंस कौर ने कमजोर हाथों से उसकी बांह पकड़ ली।

"न बेटा, अंग्रेजी में न लड़ो। मेरे कुछ पल्ले नहीं पड़ता। बहू को कुछ न कह।"

वह सतबीर को कमरे से बाहर ले जाने लगी।

"मैं इसे कुछ नहीं कह रहा मम्म। मैंने इसको ओनली इतना कहा है कि अगर तुम्हें इस घर में रहना है तो मेरी मम्म की रेस्पेक्ट कर।" वह माँ को समझा रहा था।

"मुझे नहीं जरूरत रसेक्ट (रस्पेक्ट) की, बस मेरे रूम को न छेड़े पुत्त। मेरी चीजें...। इसको समझा दे अंग्रेजी में कि मेरी कोई भी चीज बाहर न फेंके। मैं तुमसे और कुछ नहीं मांगती।" वह दोनों हाथ जोड़े खड़ी थी।

"आज के बाद यह तुम्हारे रूम में नॉक करके आएगी। मम्म ... तुझसे पूछकर। आय विल टीच हर, हाऊ टू बिहेव..।" वह गुस्से में बोला।

"न पुत्त, लड़ो न। बहू को न मारना। इस बेचारी का क्या कसूर है। मुझे बात समझ में नहीं आती।" उसने पुत्र को समझाया।

कैथी चुपचाप अपने कमरे में चली गई। उस दिन के बाद वह दुबारा बगैर पूछे उसके कमरे में नहीं घुसी। पूछकर आती, उसका रूम साफ करती, कपड़े धो देती, उसको नहला-धुला देती और उसकी पसंद का खाना उसको देती, पर उसके कमरे की किसी वस्तु को वह बिना पूछे हाथ न लगाती।

बहुत समझदार लड़की थी कैथी। सतबीर के साथ उसने लव-मैरिज की थी। वह उस फर्म में क्लर्क का काम करती थी जहाँ सतबीर इंजीनियर लगा हुआ था। कैथी और सतबीर की मित्रता प्यार में बदली तो दोनों ने विवाह का फैसला कर लिया।

"मैं पहले अपनी माँ से बात करूँगा।" सतबीर ने उसको बताया तो कैथी हँस पड़ी।

"विवाह तुमने करना है या तेरी मम्म ने ?"

"सट अप! कैथी मेरा ख्याल है कि तू बहुत समझदार लड़की है। इन छोटी छोटी बातों के कारण अपने रिलेशन खराब नहीं करेगी। मैंने दुनिया में सिर्फ एक ही इन्सान को प्रेम किया है वह है मेरी माँ। जिस दिन भी तुमने उस प्रेम में रुकावट बनने की कोशिश की तो तुम्हारे मेरे बीच रिश्ते का वह अन्तिम दिन होगा। और सच मानना, मैं मजाक नहीं कर रहा।" वह संजीदगी के साथ कैथी की आँखों में झाँकता हुआ बोला।

"यदि तुम्हारी माँ ने मुझे पसंद न किया फिर ? कैथी के गुलाबी होंठ काँपे।

"डॉट यू वरी। मेरी माँ मेरा रोम रोम समझती है। तुझे खाली हाथ नहीं लौटाएगी।" सतबीर ने उसके गालों को थपथपाया।

हरबंस कौर ने कैथी को देखा तो उसको कुलदीप सिंह की दूसरी पत्नी यानी अपनी सौतन याद हो आई। कैथी क्या उसको हर अंग्रेज औरत अपनी सौतन जैसी लगती थी जो उससे उसका पति छीनकर ले गई थी और उसकी मित्रतों,

याचनाओं का उस पर कोई असर नहीं हुआ था। उसको और उसके बच्चों को सड़क पर बर्बाद होने के लिए छोड़ दिया था उस गोरी मेम ने। हरबंस कौर का मन हर गोरी स्त्री से डरता था और सतबीर के साथ कैथी को देखकर वह घबरा उठी। परन्तु बेटे के मुँह पर छलक-छलक पड़ती खुशी पर पोछा नहीं मारना चाहती थी। इसलिए उसने खुद को समझाया।

"लड़की तो मुझे पसंद है बेटा, बस उसको इतना बता देना कि मुझे अंग्रेजी में गालियाँ न निकाले। जो भी बात करनी है, पंजाबी में करे।" उसने शर्त रखी।

"पर वह तो पंजाबी नहीं जानती मम्म।" सतबीर मुस्कराया।

"नहीं जानती तो सिखा दे। नहीं तो फिर जब ये तेरे साथ बात करे तो तू टांसफारम करके मुझे बता दिया करना। जैसे तेरा बापू बताया करता था। पर घर में कलह-क्लेश न पड़े।" हरबंस कौर बात करती कहीं दूर खो गई थी।

कैथी और सतबीर का विवाह हो गया। कैथी ने आकर घर की सूरत बदल दी। पुराने पेपर, कारपेट, सोफे, बैड और यहाँ तक कि किचन का सामान भी बदल दिया। यदि नहीं बदला तो हरबंस कौर का कमरा।

हरबंस कौर की इस कमरे में अपनी दुनिया बसी हुई थी। वह जब भी उस कमरे में आकर लेटती तो उसकी जीवन-कथा उसके सामने किसी फिल्म की भाँति घूमने लगती। बीस बरस पहले वह इस घर में आई थी। बिना निमंत्रण, बिना बुलाये। इस घर में क्या, वह तो इस मुल्क में भी बिना बुलाये ही आई थी। दो छोटे-छोटे बच्चों के साथ। बेटा सात साल का और बेटी पाँच साल की। उसका पति कुलदीप सिंह उससे करीब पाँच साल पहले इधर आ गया था। उसकी छोटी बेटी अभी पेट में ही थी और कुलदीप सिंह ने तो अपनी बेटी का मुँह भी नहीं देखा था।

"वहाँ पहुँचते ही तुम्हें राहदारी भेजूँगा। तू बच्चों को लेकर आ जाना।" कहकर वह पानी वाले जहाज में चढ़ आया था।

पर जाने के बाद न उसने राहदारी भेजी और न ही उसको बुलाया। प्रारम्भ में अपने माँ-बाप को चिट्ठी लिखता रहा, फिर धीरे-धीरे वह भी बंद हो गई।

जब हरबंस कौर के माँ-बाप जीवित रहे, तब तक वह छह महीने मायके और छह महीने ससुराल में काटती रही, लेकिन माँ-बाप की मौत के बाद भाइयों-भाभियों ने घर के दरवाजे बंद कर लिए। देवर-जेठ ताने मारने लगे। विवश होकर उसके ससुर ने कुलदीप सिंह के हिस्से में आने वाली जमीन बेचकर उसको टिकटें दीं और इंग्लैण्ड के लिए उसको जहाज में चढ़ा दिया। साथ ही अपने किसी दोस्त को चिट्ठी लिख दी जो कई बरस से इंग्लैण्ड में रह रहा था। चिट्ठी में उसने लिखा कि वह हरबंस कौर और बच्चों को एअरपोर्ट से लेकर कुलदीप सिंह के पास छोड़ आए। 'जब अपनी औरत बच्चों को सामने देखेगा, अपने आप जिम्मेदारी उठाएगा।' बुजुर्ग पिता ने सोचा था।

ससुर के दोस्त ने हरबंस कौर को एअर पोर्ट से कुलदीप सिंह के घर पहुँचा दिया। परन्तु वहाँ कहानी तो कुछ और ही थी। कुलदीप सिंह किसी मेम के संग विवाह करवाये बैठा था। हरबंस कौर को देखकर उसके होश उड़ गए।

"तू यहाँ क्या करने आई है?" वह घबराकर बोला।

"और मैं कहाँ जाऊँ?" उसने एक लाचार औरत की तरह कहा।

"तू यहाँ नहीं रह सकती। वापस चली जा।" कुलदीप सिंह ने हुक्म सुना दिया।

"वापस किसके पास जाऊँ? मेरे माँ-बाप मर गए। तेरे भाई मुझे देखकर भी राजी नहीं। फिर मैं बच्चों को लेकर किधर जाऊँ? बापू जी ने कहा था कि खुद संभालेगा अपने टब्बर को हरबंस कौर ने दो शब्दों में अपनी कहानी सुनाई।पर मेरा तो और भी टब्बर है यहाँ– मैंने तो विवाह करवा लिया था विलैट में आकर। इतने ठंडे मुल्क में अकेला बंदा कैसे रह सकता है। मेरी बीबी गोरी है, दो बच्चे हैं...।" उसने इस प्रकार कहा जैसे कोई द्वार पर आए फकीर को कहे कि हम तो खा-पका हटे हैं।

हरबंस कौर को समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे। उसको उम्मीद नहीं थी कि बात यहाँ तक भी बिगड़ सकती है।

"तू वापस लौट जा। तेरे जाने का खर्चा मैं दे देता हूँ।" कुलदीप सिंह उसको चुप देखकर बोला।

"मैं कहाँ लौटूँगी अब ? यही रहती रहूँगी। लोग दो दो विवाह करवा ही लेते हैं।" वह रोती हुई बोली।

कुलदीप सिंह चुप हो गया।

शाम को उसकी दूसरी बीबी काम पर से वापस लौटी। वह इन नए मेहमानों को देखकर हैरान रह गई। कुलदीप सिंह ने उसको ढंग से समझाने की कोशिश की कि यह उसका पहला परिवार है और उसके बाप ने जबरन इधर भेज दिया है। वह शीघ्र ही इनको वापस इंडिया भेज देगा। पर गोरी मेम के जैसे बदन में आग लग गई थी। उसने कुलदीप सिंह सहित सारे परिवार का सामान उठाकर बाहर फेंक दिया।

"या तो यह रहेगी या मैं।" उसने दो-टूक फैसला सुनाया।

"मैं तेरे बर्तन मांज दिया करूँगी... खाना बना दिया करूँगी...।" हरबंस कौर ने गोरी के पैर पकड़ लिए।

गोरी ने कई बातें उसको इंग्लिश में कही जो उसके पल्ले नहीं पड़ीं।

"इसे कह दे कि मैं नौकर बनकर रह लूँगी। कभी हक नहीं मांगती बराबर का...।" हरबंस कौर ने अपने पति से याचना की।

"यह तो तेरा नाम भी नहीं सुनना चाहती। तेरे साथ मुझे भी घर से निकालने को फिरती है।" वह नफरत के साथ बोला।

फिर बहुत देर तक कुलदीप मेम के साथ इंग्लिश में तू-तू, मैं-मैं करता रहा और बात इस फैसले पर जाकर निपटी कि कुलदीप दो चार दिनों में ही अपनी बीबी बच्चों को वापस इंडिया भेज देगा।

उसी समय उसने हरबंस कौर को साथ लिया और अपने किसी मित्र के खाली पड़े मकान में छोड़ आया, यह कहकर कि कल सबेरे ही आकर उनके साथ बात करेगा। हरबंस कौर ने भी पति पर अधिक जोर डालना ठीक नहीं समझा– "चलो, अगर जवानी में गलती कर ही बैठा है तो फिर क्या है। यदि वह उसको अलग घर लेकर दे दे और कभी-कभी आता-जाता रहे तो उसके लिए वही बहुत है।"

परन्तु कुलदीप सिंह न दूसरे दिन सबेरे आया और न तीसरे दिन। घर में न दीया न बत्ती, न पानी न आग। ठंड से बच्चों की कुल्फी जम गई। भूखे-प्यासे वे दो दिन माँ के साथ चिपटे रहे। रात को ऊपर लेने को न कपड़ा, न लत्ता, ठिठुरती-काँपती वह दोनों बच्चों को अपनी बुक्कल में लेकर रात गुजार देती।

बाहर बर्फ पड़नी शुरू हो गई थी। हरबंस कौर कुलदीप सिंह की प्रतीक्षा करते-करते थक गई। उसको तो वह भी नहीं पता था कि वह कहाँ रह रही है और उसका पति कहाँ रहता है। तीसरी रात जब ठंड ने कहर बरसाना प्रारम्भ किया तो वह उठी और साथ वाले पड़ोसी का उसने दरवाजा जाकर खटखटाया।

किसी अधेड़-से पंजाबी सिक्ख ने दरवाजा खोला।

"क्या बात है ? कौन है भाई ?" वह सामने एक अनजान औरत को देखकर हैरान हुआ।

"मैं जी...। आपके पास वाले मकान में दो दिन पहले ही आई हूँ। मेरा आदमी छोड़कर गया था मुझे यहाँ... पर दो दिन हो गए लौटकर नहीं आया। मेरे साथ ये छोटे-छोटे दो बच्चे हैं। ठंड के मारे सारी रात नहीं सोते। अगर आपके पास कोई रजाई पड़ी हो फालतू तो दो दिन के लिए उधारी दे दो, वाहेगुरु भला करेगा...।" वह हाथ जोड़कर बोली।

"साथ वाले घर में ?" वह हैरान हुआ, "साथ वाले घर में तो दस साल हो गए कभी कोई पंछी नहीं फड़का, तू कहाँ से आ गई ?"

"पता नहीं जी, इनका पिता छोड़कर गया है।" उसने बेबसी में सिर हिलाया।

"और मुड़कर नहीं आया....! हूँ...।" पड़ोसी ने लंबा हुंकारा भरा।

आसमान से बर्फ गिरकर बच्चों के सिर पर पड़ रही थी और वे अपनी माँ की टाँगों के साथ लिपटे नाक सुड़ुक रहे थे।

"आ जाओ... अंदर आ जाओ।" वह राह छोड़ता हुआ बोला।

हरबंस कौर ने बच्चों के संग झिझकते हुए अंदर प्रवेश

किया। पड़ोसी का घर आवाँ की तरह गरम था। अंदर घुसते ही उसकी ठिठुरन कम हो गई।

"आओ, बैठ जाओ।" वह उनको सिटिंग रूप में ले आया जहाँ गैस का हीटर चूल्हे की भाँति चल रहा था।

दोनों बच्चे दौड़कर हीटर के इर्दगिर्द बैठ गए और हाथ सेंकने लग पड़े। हरबंस कौर दरवाजे के बीच ही एक तरफ खड़ी रही।

"आ जा, बैठ जा तू भी।" पड़ोसी ने पास पड़े पुराने सोफे की ओर इशारा किया।

वह सिकुड़ी-सी होकर कुर्सी पर जा बैठी।

पड़ोसी रसोई में गया और बिस्कुटों के दो पैकेट लाकर बच्चों के हाथ में पकड़ा दिए। बच्चों ने एक बार माँ की तरफ देखा और दूसरे ही पल बिस्कुटों पर टूट पड़े। पता नहीं कितने दिनों से भूखे थे। वह अधेड़ आदमी पुन: रसोई में गया और केतली भरकर चाय बना लाया। हरबंस कौर इंकार न कर सकी। उसने खुद उठकर बच्चों को कपों में चाय डालकर दी।

"तू भी पी ले...।" मर्द ने कहा।

"नहीं, मेरा तो कुछ नहीं। बच्चे भूखे हैं...।" उसने कहा, पर उसका पेट भूख से ऐंट रहा था। सामने चाय देखकर यह ऐंठन और गहरी हो गई।

"कोई बात नहीं, तू भी ले ले। और बना लेंगे।" मर्द ने उसको कप में चाय डालकर दी और पहला घूँट चाय का अन्दर जाते ही हरबंस कौर को लगा, मानो उसमें फिर से जान पड़ गई हो। उसने बची खुची चाय भी पी ली।

"मैं देखता हूँ, तेरे लिए कुछ अन्दर पड़ा हो। रजाई तो कोई फालतू नहीं, हाँ एक पुराना कम्बल मेरी नौकरी के समय का पड़ा है। अगर तुझे ठीक लगे तो...।" वह अन्दर गया और हाथ में कंबल लेकर लौट आया।

"हीटर चलता है तेरे घर में?" उसने पूछा।

"हीटर क्या?" हरबंस कौर की समझ में कुछ न आया।

"ये ... ऐसी अंगीठी।" उसने गैस हीटर की ओर संकेत किया।

"नहीं। वहाँ तो न पानी है रसोई में और न बिजली है।" वह कम्बल पकड़ते हुए बोली।

"फिर तुमने बच्चों को मारना है वहाँ?" पड़ोसी मर्द हैरानी भरे गुस्से से बोला।

"फिर, और क्या करूँ मैं अब?" वह बच्चों की ओर देखकर बोली जो थोड़ी सी गरमाहट पाकर नीचे फर्श पर ही सो गए थे।

"ले, ये तो सो भी गए।"

"अच्छा!...सो भी गए? भूखे थे मासूम...। गरमाहट मिलते ही सो गए। उसने कंबल हरबंस के हाथों से लेकर बच्चों के ऊपर ओढ़ा दिया।

"मैं फिर अब इनको उठाकर ले जाऊं?" हरबंस कौर ने जैसे अपने आप से कहा।

"उठाने क्यों हैं? पड़े रहने दे। मुश्किल से तो सोये हैं बेचारे। वहाँ ठंड में जाकर बीमार हो जाएंगे।" पड़ोसी ने तरस के साथ बच्चों के सिर पर हाथ फेरा।

और फिर हरबंस कौर भी बच्चों के पास ही बैठ गई। पड़ोसी दूसरे कमरे में जाकर अपनी रजाई उठा लाया और नीचे फर्श पर रख दी।

"ये ले, तू भी टांगों को ढक ले।" उसने हरबंस कौर से कहा।

"पर रजाई तो एक ही है जी तुम्हारे पास।" वह उठती हुई बोली।

"कोई बात नहीं, मैं भी यहीं रात काट लूँगा। मिलजुलकर टाइम निकाल लेंगे।" कहकर उसने सिरहाना नीचे फेका।

हरबंस कौर रजाई के आधे हिस्से में अपने पैर ढके बैठी थी और आधे में पड़ोसी के पैर थे।

"मेरा नाम फौजी करनैल सिंह है... अकेला ही रहता हूँ। पीछे फरीदकोट से हूँ।" मर्द ने अपनी जान-पहचान करवाई।

हरबंस कौर ने अपनी कहानी रो रोकर फौजी करनैल सिंह को सुना डाली।

"अगर तू मुझे न भी बताती, मैं तब भी समझ गया था तेरी हालत को...।" फौजी ने ठंडी आह भरी। "जो आदमी तीस-बत्तीस साल की जवान औरत और दो मासूम बच्चों को

रात के अँधेरे में इस तरह फेंककर भाग गया, उसके दुबारा आने की आस छोड़ दे। अपने आपको संभाल।"

हरबंस कौर पत्थर का बुत बनी उसकी बातें सुनती रही। रात आधी से अधिक बीत चुकी थी। कई दिनों की थकी हुई थी वह, पता नहीं कब, बैठी-बैठी की आँख लग गई।

आँख खुली सबेरे दिन चढ़े शर्म के मारे उसका पीला रंग लाल हो गया जब उसने देखा कि वह फौजी की बाँह पर सिर रखे सोई पड़ी थी। एक ही रजाई में वे दोनों गुच्छा-मुच्छा हुए पड़े थे और दोनों बच्चे निश्चिन्त, बेफिक्र सोये पड़े थे मानो जंग लड़कर थके हों। वह आहिस्ता-से उठी कि फौजी जाग न जाए, पर शायद वह पहले ही जागता था।

"मैं तेरे जागने का इंतजार कर रहा था बंसो...। मैंने सोचा, मुश्किल से तेरी आँख लगी है, क्या उठाना।" वह स्वयं अधसोया-सा बोला।

हरबंस का जिस्म काँप रहा था। वह सारी रात किसी पराये मर्द की बांहों में सोई रही थी। वह फौजी से आँखे नहीं मिला पा रही थी। वह काँपती टाँगों से उठी और सिर पर चुन्नी लेकर बच्चों को जगाने लगी।

"उन्हें सोया रहने दे बंसो... अपने आप उठ जाएंगे। चल, मैं तुझे रसोई में चलकर अंग्रेजी चूल्हा जलाना बताता हूँ।" वह उठता हुआ बोला।

दोनों रसोई में चले गए। फौजी ने उसको रसोई का सामान इस्तेमाल करना सिखाया और फिर दोनों मिलकर चाय बनाने लगे।

"मैं तो जी सिर्फ रजाई माँगने आई थी..." वह सिर झुकाये खड़ी थी।

"कोई बात नहीं। तेरे साथ दो छोटे-छोटे मासूम बच्चे हैं, इन्हें लेकर कहाँ भटकती फिरेगी ठंड में? जब तक तुम्हारा कुछ नहीं बनता, यहीं रहती रहो।" कहकर फौजी बच्चों के पास जा बैठा।

फौजी करनैल सिंह ने हरबंस कौर द्वारा संग लाए कागज खंगाले और उनमें से कुलदीप सिंह का पता ढूँढ़ा। हरबंस कौर और बच्चों को छोड़कर वह अकेला ही कुलदीप सिंह से बात करने चला गया। हरबंस कौर शाम तक दरवाजे पर आँखें गड़ाये बैठी रही कि कब कुलदीप सिंह को लेकर फौजी वापस लौटता है। रात हो गई और फौजी अकेला ही वापस लौटा।

"वे तो मकान छोड़कर कहीं और चले गए हैं...।" फौजी ने ढीली-सी आवाज में कहा।

"और कहाँ?" हरबंस कौर की आवाज डूब गई।

"कुछ पता नहीं। मैं आज सारा दिन सड़कों पर घूमता रहा। कोई सुराग नहीं मिला।" वह सोफे पर पैर इकट्ठे करके बैठ गया।

"फिर अब हमारा क्या होगा?" हरबंस ने माथे पर हाथ मारा।

फौजी चुप रहा।

"हाय रे रब्बा!...किन जन्मों के बदले लिए...।" वह सिर पीटने लग पड़ी। और बच्चे भी उसके साथ ही रोने लग पड़े। "मैं पैदा होते ही मर क्यों न गई मेरे रब्बा! हाय, मुझे जन्मते ही अंगूठा दे देती मेरी माँए...।" वह विलाप कर रही थी।

"न रो ऐसे... मेरा दिल डूबता है।" फौजी जो सारी उम्र तोपें, बन्दूकें चलाते हुए और बमों-बारूदों के साथ खेलता रहा था, एक औरत के विलाप के दो बोल न सहन कर सका। बच्चों को अपनी गोद में उठा लिया उसने।

"चल उठ, बच्चों को खाने-पीने को दे कुछ। इनका क्या कसूर है?" वह उठकर रसोई में चला गया।

हंरबंस कौर बहुत देर तक रोती रही। फौजी ने बच्चों को खिलाया-पिलाया और वे कल की तरह फिर हीटर के पास जा सोये।

"अगर ये बच्चे न होते तो मैं किसी कुएँ में जा गिरती। आदमी आप तो आजाद हो जाता है, पर औरत को बच्चों के साथ बाँध देता है, जैसे गाँव में पशुओं के पैरों में रस्सी का फंदा डाल देते हैं ताकि वो कहीं जा न सके।" वह अकेली बैठी बातें कर रही थी।

"बात सुन मेरी...। आ तुझे एक चीज़ दिखाऊ...।" फौजी उसको बांस से पकड़कर उठा रहा था।

वह उसके पीछे पीछे चल पड़ी। पिछले गार्डन का दरवाजा खोलकर फौजी ने लाइट जलाई।

लम्बी कहानी

अंधेरे में झाड़ियों में से एक बड़ा-सा पक्षी बैठा था।

"ये मादा पक्षी यहाँ हर साल आती है बंसो। जब भी इसके पेट में बच्चे हों, यह मेरे गार्डन में आ जाती है। मैं पानी से भरा कूजा और दानों की थैली भरकर यहाँ रख देता हूँ। यह दस-पन्द्रह बच्चों को एक साथ जन्म देती है। रातभर दस-पंद्रह बच्चों को अपने पंखों के नीचे छिपा कर रखती है। ममता की मारी यहाँ से हिलती नहीं। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो फिर ये जा, वो जा। चार दिनों बाद फिर माँ बनने को तैयार हो जाती है।"फौजी ने किसी कहानी की तरह बात सुनाई, पर बंसो ने हुंकारा न भरा।

"मेरा मतलब यह है कहने का कि इस पक्षी का तो किसी के साथ विवाह नहीं होता, पर बच्चे फिर भी पैदा किए जाती है। ममता मादा के अन्दर है। सृष्टि की रचना करती है मादा। ईश्वर ने अपनी दूत बनाकर भेजा है उसको धरती पर। यदि मादा नर के बेवफाई के कारण बच्चे ही पैदा करने बंद कर दे या बच्चों से ही बदला ले तो सृष्टि का कारोबार रुक जाएगा, बंसो।" फौजी चलते चलते उस मादा पक्षी के पास जा खड़ा हुआ जो अपने बेटों को पंखों के नीचे छिपाये बैठी थी और फौजी को देखकर कभी आँखें खोलती और कभी बंद कर लेती।

"बच्चे कभी औरत के लिए पशु के पैरों में बंधी रस्सी नहीं बनें, वे तो उसकी सम्पूर्णता है, गौरव हैं औरत का कि वह ईश्वर की तरह सृजनहार है। तभी तो ग्रंथों में माँ को ईश्वर का दर्जा दिया गया है। माँ ईश्वर का मास्टर पीस है, माँ बनाने के बाद वह उस जैसी कोई अन्य चीज नहीं बना सका।" फौजी अब पक्षी के पंखों को अपने हाथों से सहला रहा था।

"ग्रन्थों में यह भी तो लिखा है कि औरत जूती है मर्द के पैरों की...।" हरबंस कौर ने गोली की तरह सवाल दागा।

"कौन से ग्रन्थ में लिखा है? फूंक दो ऐसे ग्रन्थों को जिसमें औरत को पैर की जूती लिखा गया हो। औरत को चाहिए ऐसे ग्रंथ को घर में तो क्या शहर में भी न प्रवेश करने दे। पढ़ा भी है कोई ग्रंथ या यूँ ही सुना-सुनाया है?" फौजी फिर उसके पास आ खड़ा हुआ।

"मैंने कहाँ पढ़ना था। लोग ही कहते हैं...।" हरबंस ने अपना सच बताया।

"यही तो खराब बात है। असल में तुम्हें सिखाया ही यही जाता है पैदा होते ही कि पति परमेश्वर है। बेशक साला बंदा भी न हो, निरा गधा हो, पर तुम उसकी पूजा करने से नहीं हटतीं। गधे को चंदन लगाती रहती हो।" फौजी हँस पड़ा।

"और क्या है औरत? बांदी होते हैं बंदे की...। तुम तो अंग्रेजी किताबें पढ़ते हो। तुम्हें क्या पता ग्रंथों के बारे में...।" हरबंस कौर के पल्ले फौजी का ग्रंथ ज्ञान नहीं पड़ रहा था।

"पंजाबी ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में ही लिखा है कि "सो किउ मंदा आखियै, जितु जम्मै राजान" किसी अंग्रेजी किताब की बात नहीं कर रहा हूँ मैं। पर हकीकत में लोग वो करते नहीं न जो ग्रंथों में लिखा है।" फौजी ने अफसोस के साथ सिर हिलाया।

"मुझे क्या लेना है ग्रंथों से। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती।" वह हारे हुए सिपाही की भाँति बोली।

"तुम्हारी समझ के लिए इतना ही काफी है कि तुम्हें किसी कुएँ में गिरने की जरूरत नहीं। माँ हो तुम। बहुत बड़ी जिम्मेदारी है तुम्हारे सिर पर। अपने बच्चों को पाल...।" फौजी ने उसकी पीठ सहलाई।

"पर किसके सिर पर?" हरबंस ने प्रश्न किया।

"यह मादा पक्षी किसके सिर पर पालती है?" फौजी ने भी प्रश्न पर प्रश्न किया।

"इसे तो तुम दाना-पानी दे छोड़ते हो जी।" हरबंस ने मानो ..... किया हो।

"तेरे बच्चों को भी मैं यूँ ही दाना-पानी देता रहूँगा, जब तक वे जवान नहीं हो जाते। तुम अपने बच्चों को पंखों के नीचे रखने की शक्ति पैदा करो।" फौजी ने दौड़धूप करके हरबंस कौर और उसके बच्चों को सोशल सिक्युरिटी के पैसे लगवा दिए। बाहर से किसी फैक्टरी से वह बिजली के प्लग जोड़ने का काम उसको ला देता और वह घर में बैठी दस-बीस पौंड कमा लेती। बच्चे स्कूल जाने लगे। यद्यपि दुख उसका कम नहीं हुआ था, पर बच्चों की जिन्दगी के लिए उसने खुद को संभाल लिया था। घर से कम ही निकलती थी वह। घर से

बाहर क्या हो रहा है, उसको कुछ पता नहीं था। दुनिया कहाँ बसती है, इससे बेखबर हो गई थी वह।

एक दिन बच्चे स्कूल गए हुए थे और फौजी भी घर पर नहीं था। अचानक दूध खत्म हो गया और वह कोने वाली दुकान से दूध की बोतल लेने चली गई। दुकान पर एक मरियल-सा आदमी बैठा था।

दूध की बोतल देकर जब वह पैसे लेने लगा तो उसने हरबंस का हाथ पकड़ लिया। हरबंस के हाथ से बोतल छूटकर नीचे जा गिरी।

"मरजाणे, माँ-बहन नहीं है तेरे।" उसने दो चार देसी गालियाँ दुकानदार को निकालीं।

"बूढ़े फौजी में क्या ढूँढ़ती है, तुझे तो हम उम्र की आग चाहिए। हुक्म कर तेरे घर के आगे दूध की छबीलें लगा दूंगा।"

वह प्रत्युत्तर में बेशरमी से बोला।

हरबंस कौर दूध के पैसे वहीं फेंककर वापस घर की ओर दौड़ी। घर आकर बहुत देर तक रोती रही। 'तो लोग ऐसी बातें करते हैं? मेरे साथ फौजी बेचारे की भी मिट्टी खराब हो रही है?" वह अपने आप से सवाल करती रही।

शाम को फौजी घर लौटा तो उसने सारी बात रो-रोकर उसको सुनाई।

"कौन सा शॉपकीपर? वही मरियल-सा? अखबार बेचता है जो?" उसने दुकानदार की पहचान जाननी चाही।

बंसो ने हाँ में सिर हिलाया।

फौजी हल्का-सा हँसा।

"तुम्हें यह बात हँसी की लगती है।" वह खीझ गई।

"नहीं, मुझे यह बात हँसी की नहीं लगती। तुम कभी घर से बाहर नहीं निकली और तुम्हें पता ही नहीं कि लोग क्या-क्या बातें करते हैं। मैं तो रोज ही सुनता हूँ।" फौजी यूँ बोला जैसे वह साधारण-सी बात हो।

"तुम्हें भी कहते हैं?" वह घबरा गई।

"हाँ, कहते हैं कि बेगानी औरत को घर में रखे बैठा है। दुनिया के लिए मैं एक गलत आदमी हूँ बंसो, पर कई बार जिन्दगी में सबसे गलत आदमी ही तुम्हारे लिए सबसे सही आदमी होता है।" वह गर्दन झुकाये बोला।

"फिर तो बुरी बात है। इसका क्या इलाज है? बंसो चिंतित थी।

पर फौजी ने कोई उत्तर न दिया। दोनों बहुत देर तक चुप रहे।

"अगर तुम कहो तो मैं एक बात कहूँ?" बंसों की आवाज गंभीर थी।

"हाँ बता।" फौजी ने सिर ऊपर उठाया।

"तुम मेरे पर चादर डाल लो।" उसने पहली बार फौजी की आँखों में आँखें डालीं। सोफे पर बैठे फौजी को झटका सा लगा।

"वैसे भी तो हम इकट्ठे ही सोते हैं एक रजाई में, बेशक कुछ करते नहीं।" फौजी हैरान था कि बंसो आज लक्ष्मण रेखा कैसे लांघ गई थी। उसने ध्यान से बंसो की तरफ देखा, पीला रंग सोने जैसा, भरा हुआ जिस्म और आग की तरह दहकती आँखें। फौजी को लगा जैसे बंसों को जवानी का सैलाब चढ़ आया हो।

वह बहुत देर तक खाली-सी नजरों से बंसो को देखता रहा।

"बंसो... चादर तो मैं तेरे पर उसी रात की डाल लेता जब तू किसी दूध पीते बच्चे की तरह मेरी बांह पर सिर रखकर सोई थी, पर मैं इस काबिल नहीं हूँ। फौजी का चेहरा पत्थर की तरह सपाट था, भावना शून्य।

"क्यों, तुम्हें क्या हुआ है?" बंसो ने सवालिया नजरों से उसकी तरफ देखा।

"जब मैं वर्मा की लड़ाई में गया था, तब दुश्मन की गोली मेरे गुप्तांग पर लगी थी। आपरेशन करके डॉक्टरों ने गोली तो निकालनी ही थी, पर साथ ही मुझे नामर्द बना दिया। मैं औरत के योग्य नहीं रहा। मंगनी तो मेरी भी हुई थी, जंग में जाने से पहले और मेरी ससुराल वाले इंतजार कर रहे थे कि कब लड़का जंग से वापस लौटे और विवाह करें। परन्तु जब मैं वापस ही नहीं गया तो उन्होंने लड़की कहीं दूसरी जगह ब्याह दी। मैं जाकर करता भी क्या? बहुत संदेशे भेजे मेरे

सालों ने कि जिस दिन इंडिया आया, तुझे काटकर फेंक देंगे... तूने हमारी बहन के साथ दगा किया है। मैंने सोचा ससुरो, कटे हुए को क्या काटोगे... जिसे किस्मत ही काट कर...। बस बंसो, फिर मैं वापस नहीं गया। इंग्लैण्ड की सरकार ने मुझे यहाँ रहने की इजाज़त दे दी। बस, तब से मैं अकेला ही यहाँ हूँ।" करनैल सिंह ने गहरा नि:श्वास लिया।

हरबंस कौर सिर झिकाये बात सुनती रही।

"तूने कहा है कि मैं तेरे पर चादर डाल लूँ। जब तू पहली बार मेरे साथ सोई थी तो मैंने तुझे इसलिए नहीं बख्शा था कि मैं कोई देवता था। शास्त्रों में लिखा है कि औरत अग्नि है, साक्षात आग की बेटी, बड़े-बड़े योगियों-मुनियों को जलाकर भस्म कर देती है... और उस रात मैं मान गया था कि यूँ ही नहीं किसी ने लिखा है। मैं सारी रात आग को आगोश में लिए पड़ा रहा... सेंक मुझे भी लगा, अंग मेरे भी जले, पर इस आग को बुझाने के लिए पानी का कोई चश्मा मेरे पास नहीं था। कुछ तो उम्र का अंतर और कुछ मेरी विवशता, इसलिए उस रात वह नहीं हुआ जो होना चाहिए था। और फिर मैं कोई देवता नहीं हूँ।"

हरबंस ने देखा, फौजी की साँसे फूल रही थीं।

"तू जवान औरत है बंसो। जवान औरत हवा की तरह जहाँ से भी गुजरती है, वहीं की महक और बदबू उसके साथ हो लेती है और लोग दोष औरत का मानते हैं। अगर तुझे देखकर इधर-उधर उंगलियाँ उठती हैं तो यह कोई नई बात नहीं। सीता जैसी स्त्रियाँ यहाँ बदनाम हुई हैं जो सारी उम्र पति के साथ जंगलों में धक्के खाती रहीं, फिर भी घर से निकाली गई। मर्द शुरू से ही औरत को इस्तेमाल करके छोड़ता रहा है। तुझ अकेली के साथ ही ऐसा नहीं हुआ।" फौजी उसको दिलासा दे रहा था।

"पर... पर...।" बंसो ने कुछ कहना चाहा।

"मैं जानता हूँ, तेरी उम्र में हर औरत आदमी का साथ मांगती है। मैं तेरा विवाह करवा दूंगा बंसो, कोई भला०सा आदमी तलाश कर...। पर तेरा डायवोर्स तो हो पहले। तेरे तो पति का भी पता नहीं कहाँ है।"

"मुझे नहीं जरूरत डगोर्स की... ऐसा आदमी तो मरों से भी ज्यादा होता है। मरे हुए का तो औरत सारी उम्र अफसोस करती है, पर ऐसे कंजर का तो दो दिन में ही स्यापा निपटा देती है।" बंसो के मन में अपने आदमी के लिए नफरत ही नफरत थी।

"अगर तेरी यही राय है, तो फिर मैं खोजता हूँ कोई आदमी...।" फौजी सोफे पर से खड़ा होकर बोला।

"पर मैंने तो तुम्हारी बात की थी जी ?" वह फिर सवाल बनकर उसके सामने खड़ी हो गई।

फौजी चुप रहा।

"मुझे किसी दूसरे आदमी की जरूरत नहीं है जी। न ही अंगों को रगड़ने को प्यार कहते हैं। जैसे तुमने मुझे और मेरे बच्चों को संभाला है, मेरा जी करता है, मैं तुम्हारे चरण धोकर पीऊँ। मुझे किसी मर्द की जरूरत नहीं, किसी गरमाहट की जरूरत थी, जो तुम्हारे पास थी, सिर्फ तुम्हारे पास। मैं तो सिर्फ रजाई मांगने आई थी। कई बार सोचा करती हूँ कि वह गरमाहट रजाई की थी या तुम्हारी ? पहले भी तो तीस साल रजाइयों में ही सोती रही हूँ।" बंसो की आवाज भीग गई थी। "असल में चादर डालने की बात तो मैंने इसलिए कही थी कि बच्चे तुम्हें बापू कहने योग्य हो जाएँ और लोगों की बातों को लगाम लगे।"

"बंसो, हम लोगों के जीवन में कितना दोगलापन क्यों है ? तुम अपने बच्चो को बताओ कि हमारा क्या रिश्ता है। गोरों की तरफ देख, एक अपने सगे बाप को छोड़कर ये किसी दूसरे को बाप नहीं कहते, सबका नाम लेकर बुलाते हैं। अपने लोग फिजूल में रिश्तों को मथने बैठ जाते हैं। रातों रात रिश्ते बन गए, सुबह होने तक खत्म हो गए। रिश्तों के बगैर क्यों नहीं जी सकते हम ? किसी का भाई नालायक होगा तो वह किसी बाहरी व्यक्ति को धर्म का भाई बना लेगी और कहेगी- मेरा भाई है। बच्चे भी 'मामा जी... मामा जी...' किए जाएँगे, मामा बेशक माँ का यार ही हो, पर लोगों के सामने तो भाई

बना लिया ना। यूँ ही फिजूल की ड्रामेबाजी सीधा कहो कि मेरा दोस्त है... मेरा मित्र प्यारा है, इसमें कैसी शर्मिन्दगी?" फौजी की सोच भिन्न थी।

"मैं सोचती हूँ कि लोग क्या कहेंगे?" बंसो ने धीमे से अपना तर्क रखा।

"देख बंसो। लोग क्या कहेंगे, यह जानना तेरा काम है। जब तक तुम अपने में इतनी हिम्मत पैदा नहीं कर लेती कि बाहर के कौओं-कुत्तों को सामना कर सके, तुझ पर वार होते रहेंगे। डार्विन ने कहा था कि इस जंगल में वही बचते हैं, जो लड़ते हैं और अपनी रक्षा खुद करते हैं...। औरत को चाहिए कि अपनी रक्षा खुद करना सीखे।" फौजी ने डार्विन का सिद्धांत बताया, पर बात बंसो के सिर के ऊपर से निकल गई।

"रब करे तू जीता रहे मेरी रक्शा करने वाला... पहले क्या कम की है?" बंसो 'रक्षा' रक्शा कहती थी।

"मैंने कौन सी रक्षा की है तुम्हारी। नदी किनारे खड़े एक बूढे दरख्त की जड़ें पकड़कर तुम लटक गई बंसो, पता नहीं कब यह दरख्त गिर जाए और तूफान में बह जाए।" फौजी ने चिंतित होकर कहा।

"तूफानों में अब मैं नहीं डूबने वाली जी। मैं तैरना सीखूँगी... और मुझे देखकर कई और तैरेंगी। तुम थोड़ा सहारा दो।" उसने हाथ आगे बढ़ाया।

"यदि तेरी यही मंशा है तो फिर 'बांह जिन्हां दी पकड़िये, सिर दीजे बांह न छोड़िये'। मैं भी सिक्ख का बेटा हूँ, आखिर तक निभाऊँगा...।" फौजी को उम्मीद नहीं थी कि बंसो इतनी गहरी बात भी कर सकती है।

उस दिन के बाद इस विषय पर दुबारा कोई बात नहीं हुई। बच्चों ने जब फौजी को एक-दो बार 'अंकल जी' कहकर बुलाया तो बंसो ने झिड़क दिया।

"न, अंकल जी नहीं कहना, बापू जी कहा करो।" और बच्चे उस दिन से आज तक फौजी को बापू जी ही कह रहे हैं।

लोग बाहर क्या बातें करते हैं, बसों ने कानों में कड़वा तेल डाल लिया, मानो ये लोग उसके लिए कोई वजूद ही नहीं रखते हों। वह रूह से जीने लग पड़ी। फौजी ने उसको गुरमुखी पढ़नी सिखा दी। वह सुन्दर से सुन्दर कपड़ा पहनती और फौजी के ईंटों के मकान को उसने घर में बदल दिया। फौजी कई बार कहता–

"बंसो, अकेले बंदे की भी क्या जून है? अगर औरत न हो तो बंदा कीड़े पड़कर मर जाए। रब ने औरत को, देखा जाए तो आदमी की माँ बनाकर भेजा है जो सारी उम्र उसकी देखभाल करती है, कभी माँ बनकर, कभी बहन बनकर और कभी बीबी बनकर, पर आदमी नाशुक्रा होकर इसी बेजुबान पर जुल्म करता है...।"

घर में नित्य नई वस्तुएँ आती, शॉपिंग की जाती, पर बंसो और फौजी की रजाई एक ही रही।

"बच्चे बड़े हो गए हैं बंसो, तू एक रजाई और खरीद ला।" एक रात फौजी ने सरसरी तौर पर कहा।

"गुजारा हो रहा है... पैसा क्यों खर्च करना है।" बंसो ने जो कहा, फौजी समझ गया।

बंसो की लड़की सत्रह वर्ष की थी जब फौजी ने अपने दोस्त के लड़के से उसका विवाह कर दिया। लड़की अपने घर में राज करती थी कभी कभी अपने पति के साथ आकर माँ को मिल जाती। बेटा सतवीर यूनिवर्सिटी तक पढ़ा बाहर तो वह किताबें ही पढ़ने जाता था, पर जीवन के दूसरे सब तौर तरीके उसको फौजी ने सिखाये थे। सतबीर माँ की पूजा करता था। उसे याद था कि कैसे उसकी माँ ने दुख देखे थे। फौजी उसका सगा बाप नहीं है, वह जानता था, पर उसको कभी भी अपनी माँ से इस बात का शिकवा नहीं रहा, बल्कि उसको तो गर्व था अपनी माँ पर जो दिलेरी के साथ समाज का सामना कर रही थी।

एक दिन सबेरे सैर करने गए फौजी को दिल का दौरा पड़ा। अस्पताल में कई दिन उसको नलियाँ लगी रहीं और आखिर वह ईश्वर को प्यारा हो गया। बंसो की दुनिया अँधेरी हो गई। उस पर दूसरी बार आसमान फटा। एक ही सहारा था, वह भी जाता रहा। फौजी के साथ जो दिल की और रूह की सांझ थी, वह

तो सगी माँ के साथ भी नहीं थी। वह रो रोकर पागल हो गई। घर बैठी दिनभर सिसकती-रोती विलाप करती रहती।

एक दिन फौजी का वकील आया और कुछ कागज-पत्र उसको थमाकर चला गया। शाम को सतबीर घर आया तो उसने कागज बेटे को दिखाये। वह वसीयतनामा था। फौजी अपना घर और बैंक में पड़े सारे पैसे बंसो के नाम कर गया था।

"रे... मैं तो तेरा देना जीते जी न दे सकी.. तू मरकर अहसानों का बोझ मेरे सिर पर धर गया, मैं कैसे लौटाऊँगी ? मैं तो सिर्फ अपने बच्चों को ढंकने के लिए रजाई मांगने आई थी, तू घरबार मेरे नाम कर दिया। हाय....। अपने बोटों के लिए चुग्गा चुगने आई चिड़िया को तूने घोंसला बनाकर दिया जी... तुझे स्वर्गों में जगह मिले... तेरी अगली दरगाह में भी कलम चले रे वसीतें (वसीयतें) लिखने वाले... मेरे दिल के मरहम... मुझे भी साथ ले जाता... जी मैं तेरे बगैर कहीं की नहीं... हाय...।" वह पल्ला मुँह पर ले विलाप करने लगी।

सतबीर का कलेजा मुँह को आ रहा था। माँ ने अपनी व्यथा विलाप में गा-गाकर जवान बेटे को सुना दी थी। उसने माँ को अपनी बाहों में ले लिया। रोया वह भी बहुत, पर जी कड़ा करके बोला, "बस कर मम्म... बापूजी की आत्मा को दुख पहुँचेगा।"

बंसो बेटे की छाती पर सिर रखकर सिसकियाँ भर भर कर रोई। उसको लगा, सतबीर का और उसका दुख एक था। अंतर सिर्फ इतना था कि वह प्रकट तौर पर रो रही थी और सतबीर दिल ही दिल में।

कई बरस बीत गए। बरस क्या, उम्र ही बीत गई, पर बंसो का गम कम न हुआ। सतबीर ने बहुत कोशिश की कि किसी प्रकार माँ का मन बहलाये, पर बंसो के दुख की कोई दारू नहीं थी। आहिस्ता आहिस्ता वह दुनिया से कटती गई। जीने का चाव खत्म हो गया और वह बिस्तर से लग गई। उसके लिए फौजी के बाद दुनिया ही सूनी हो गई थी।

रसोई में जाना छोड़ दिया था उसने, भूख मर गई थी उसकी। सतबीर अपना अंग्रेजी खाना खुद ही बनाकर खा लेता और माँ को कम ही तकलीफ देता।

"श्रवण पुत्त है मेरा, अपने पिता जैसा...।" वह मन ही मन सतबीर की तुलना फौजी से करती और भूल जाती कि सतबीर का बाप तो कुलदीप था।

सतबीर के विवाह के बाद घर में थोड़ी रौनक बढ़ी थी, पर बंसो के लिए अपना कमरा ही स्वर्ग था। वह रजाई मुँह पर लिए दिन रात फौजी को लेकर सोचती रहती। यह रजाई एक पुल थी, फौजी और उसके बीच जो दोनों को जोड़ता था। उसको लगता, जैसे आज भी वह फौजी की बाहों में सोई पड़ी है। फौजी के जिस्म की महक और स्पर्श उसके रोम-रोम में बसी हुई थी।

आज जब दिन के बारह बज गए और बंसो न उठी तो कैथी की चिंता बढ़ी। उसने हिम्मत करके बंसो के मुँह पर से रजाई उतारी।

बंसो ने आँखें खोलीं। कैथी बैड से थोड़ी दूर खड़ी मुस्करा रही थी।

"जैस...?" बंसो ने धीमे से पूछा जैसे कह रही हो कि वह क्यों बार बार आकर उसको तंग कर रही है।

कैथी ने रजाई हाथ से सरका कर बैड पर थोड़ी-सी बैठने के लिए जगह बनाई और फिर उसके माथे पर हाथ फेरती हुई बोली–"आय नो मम्म, युअर बॉय-फ्रेंड गेव यू दिस क्विल्ट... सतबीर टोल्ड मी दैट ही लव्ड यू सो मच एंड सो यू डिड...।" कैथी ने सोचा, शायद सास के दिल में उतरने का यही एक रास्ता है।

बंसो काफी देर तक चुप रही। कैथी ने फिर अपने शब्द दोहराये।

"अगर मुझे अंग्रेजी आती होती बहू तो मैं तुझे बताती कि तेरे हिसाब से वो मेरा बाय फ्रेंड था, पर मेरे लिए धरती पर रब था। जिस रजाई को लेकर तू नाक-होंठ सिकोड़ती है, यह उस रब की बुक्कल है। और जब कोई रब की बुक्कल के निघ का आनंद ले, तो उसके लिए फिर सारे रिश्ते ठंडे हो जाते हैं...।" बंसो ने वकीलों की तरह उंगली हिलाकर बहू को डांट पिलाई। कैथी को यद्यपि बात समझ नहीं आई पर बंसो को लगा, जैसे उसने सभी अंग्रेजी बोलने वालियों से

बदला ले लिया हो।

–वीना वर्मा

जन्म : 2-10-1960, बुढ़लाडा, जिला - बठिंडा (पंजाब),
शिक्षा : बी.ए., बी.एड. पटियाला यूनिवर्सिटी
सन् 1984 में इंग्लैंड में "मूल दी तीवीं" पंजाबी में पहला कहानी संग्रह वर्दगा 1994 में छपा और खूब चर्चित रहा। दूसरा कहानी संग्रह "फिरंगियाँ दी नूंह" वर्दगा 2002 में और तीसरा कहानी संग्रह "जोगियाँ दी धी" वर्दगा 2009 में प्रकाशित हुआ है। एक कविता की पुस्तक 'जी करदी' वर्दगा 2011 में।
सम्मान : भाषा विभाग, पंजाब द्वारा 'सिरोमणि पंजाबी साहित्यकार (प्रवासी) पुरस्कार - 2010
सम्पर्क : 115 West End Road, Southall, London Middlesex UBI IJF England
ई-मेल : veenar@hotmail.co.uk,
फोन : 00442085749489
–अनुवाद : सुभाष नीरव (वास्तविक नाम : सुभाष चन्द्रा), प्रसिद्ध कथाकार, कवि व अनुवादक
ई-मेल : subhashneerav@gmnail.com,
दूरभाष : 09810534373
पता : आर जैड एफ-30 ए (दूसरी मंजिल), प्राचीन काली माता मंदिर के पीछे, वेस्ट सागरपुर, पंखा रोड़, नई दिल्ली -110046

"फणीश्वरनाथ रेणु की 40 वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम"

आँचलिक उपन्यासों के रचयिता एवं मानवीय संवेदना के प्रतीक फणीश्वरनाथ रेणु की आज 40 वीं पुण्यतिथि है। हम सब उनका नमन करते हैं। पटना (बिहार) में उनके पुण्यतिथि के अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित किये गए हैं। इसी क्रम में उनके पुण्यतिथि पर आज दिनांक 11.04.2017 को पटना में मंगलम साहित्य कला परिषद ने भी एक आयोजन किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष डॉ० बी.एन. विश्वकर्मा ने किया। इस अवसर पर शहर के कई बुद्धिजीवी एवं साहित्यकार उपस्थित हुए जिसमें प्रमुख रूप से सर्वश्री वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज, आनन्द किशोर शास्त्री, एम.पी. चौहान, सुधांशु चक्रवर्ती, अरविन्द यरवदा, लता पराशर, आस्था आनन्द, रामश्रेष्ठ दिवाना एवं अन्य ने उपस्थित होकर रेणु को श्रद्धांजलि अर्पित किया तथा कहा कि रेणु जैसा आँचलिकता के लिए आँचलिक छविवाला महापुरुष बिरले ही पैदा होते हैं। रेणु के उपन्यासों में आँचलिकता की भरपूर झलक मिलती है। उनके प्रमुख उपन्यासों में, मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, जुलूस, कितने चौराहे में आँचलिकता का वास्तविक दर्शन हमलोग पाते हैं।

काशीपुर में तिरंगा अगम काव्य गोष्ठी सम्पन्न

स्व. अगम शर्मा जी (तिरंगा अगम काव्य संगम) की मासिक काव्य गोष्ठी आदर्श युवक संघ के संयुक्त तत्वावधान में काशीपुर स्थित "आयुस" भवन सभागार में चन्द्रिका प्रसाद पाण्डेय 'अनुरागी' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर जमील हैदर शाद और सईद आजर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। काव्य पाठ करने वाले कवि एवं शायर थे। जीवन सिंह, हीरालाल साव, विश्वविजय कुमार चौबे, शम्भू लाल 'निराला', वीर सिंह मार्तण्ड, जतीब हयाल, सलमा शहर, अशरफ याकूबी, शमीम सागर, वदूद आलम, सरवर दिलकश, सोहेल खान सोहे, मुज्तर इफ्तेखारी, नूर हूसैन नूर, सागर चौधरी, यूसूफ अख्तर, आरती सिंह, रंजीत भारती, इकबाल अकील, सफिकुद्दीन सायाँ एवं अन्य। तीन घण्टे चली गोष्ठी का संचालन कुँवर वीर सिंह 'मार्तण्ड' ने किया। संयोजक शम्भू लाल जालान निराला ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पृष्ठ 1 का शेषांश

क्या दिशा लेगी .....

अब तक वे मूलत: आत्मघाती राजनीति करते रहे हैं। केवल बिहार विधानसभा चुनाव में विपक्षी दलों में परिपक्वता दिखाई। कई नेता अपने संकीर्ण राजनीतिक लाभ के लिए अपने दलों के विचारधारात्मक मूल्यों की अवहेलना करते आए हैं। हमें यह समझना होगा कि हिन्दू राष्ट्र केवल अल्पसंख्यकों के लिए खतरा नहीं है। वह स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के संवैधानिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और समाज के कमजोर वर्गों की बेहतरी के लिए उठाए जाने वाले सकारात्मक कदमों के लिए भी खतरा है।

कई राजनीतिक समीक्षकों का यह कहना है कि अब समय आ गया है कि सभी प्रजातांत्रिक ताकतें एक हों। जहाँ अन्य पार्टियां कम से कम कुछ हद तक प्रजातांत्रिक मूल्यों और सिद्धान्तों का पालन कर रही हैं वही भाजपा खुलकर हिन्दू राष्ट्र के लिए काम कर रही है। वह एकमात्र ऐसी पार्टी है जिस पर आरएसएस का पूर्ण नियंत्रण है। आरएसएस प्राचीन भारत का गुणगान और महिमामंडन करता है।

यह सही है कि अन्य पार्टियां भी पूरी तरह प्रजातंत्र और धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध नहीं रही हैं। उन्होंने कई अवसरवादी गठबंधन किए हैं। परन्तु फिर भी वे मोटे तौर पर भारतीय राष्ट्रवाद की पैरोकार है। दूसरी ओर भाजपा हिन्दू राष्ट्रवाद की झंडाबरदार है। क्या भाजपा के रथ को रोका जा सकता है ? अगर अन्य राजनीतिक दलों ने योगी के सत्ता में आने को एक गंभीर चेतावनी के रूप में नहीं लिया तो सन् 2019 के आम चुनाव के नतीजे भी उत्तरप्रदेश जैसे हो सकते हैं। हमने यह देखा है कि अगर विपक्ष दृढ़ और एकताबद्ध हो तो वह भाजपा-आरएसएस की सोशल इंजीनियरिंग और उसके राजनीतिक समीकरणों को ध्वस्त कर सकता है। पिछले आम चुनाव में भाजपा को 31 प्रतिशत वोट मिले थे। उस समय उत्तरप्रदेश में उसे कुल मतों का 41 प्रतिशत मिला था। विधानसभा चुनाव में यह घटकर 39 प्रतिशत रह गया है। कांग्रेस, जिसका सामाजिक जनाधार अब तक सबसे बड़ा रहा है, वह हमेशा से भाजपा-आरएसएस के खिलाफ रही है। परन्तु विचारधारा के स्तर पर वह गांधी, नेहरू और मौलाना आजाद के धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्तों का पालन नहीं कर सकी हैं।

कम्युनिष्ट पार्टियाँ भाजपा को एक आक्रमक सांप्रदायिक दल मानती है और उनमें से कुछ उसे एक फासीवादी राजनीतिक संगठन बताती हैं। क्षेत्रीय दलों का भाजपा के प्रति दृष्टिकोण अस्पष्ट है। उनमें से कुछ ने भाजपा से गठबंधन भी किए हैं। आप, जिसे कई लोग भारतीय राजनीति का नया उभरता सितारा मानते हैं, का एक ही एजेंडा है। वह केवल भ्रष्टाचार का विरोध करना चाहती है। क्या वह सांप्रदायिकता के खिलाफ राजनीतिक गठबंधन का हिस्सा बनेगी ? इस प्रश्न का उत्तर समय ही बताएगा। अब तक तो वह केवल ऐसे स्थानों पर चुनावी मैदान में उतरती रही हैं जहाँ भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधी टक्कर है। अभी यह कहना मुश्किल है कि क्या आप, भाजपा की राजनीति को प्रजातंत्र के लिए खतरे के रूप में देखती है और वह राष्ट्रीय स्तर पर प्रजातंत्र को बचाने के लिए गठबंधन का हिस्सा बनेगी।

जो सामाजिक आन्दोलन समाज के कमजोर वर्गों के हितों की रक्षा करने के प्रति प्रतिबद्ध है, उन्हें भी प्रजातंत्र की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए।

योगी के सत्ता में आने से एक बात साफ है। या तो उन सभी पार्टियों को, जो आरएसएस से नियंत्रित नहीं है, एक मंच पर आना होगा या उन्हें चुनावी मैदान में धूल चाटने के लिए तैयार रहना होगा। केवल बिहार जैसा राजनीतिक गठबंधन ही प्रजातंत्र की रक्षा कर सकता है। (मूल अंग्रेजी से हिन्दी रूपान्तरण **अमरीश हरदेनिया**)

राम पुनियानी चिंतक हैं एवं देशभक्त भी।

– राम पुनियानी

एक अपील

मौजूदा फासीवाद का नया चेहरा

("गांधी शांति प्रतिष्ठान" दिल्ली में 'जुटान' आयोजन में प्राप्त प्रपत्र – सं०)

बतलाना जरूरी है कि पूंजीवादी तानाशाही जब चरम प्रतिक्रियावादी साम्राज्यशाही में बदल जाती है तो वह फासीवादी रास्ता अख्तियार कर लेती है। यह तब होता है जब देश-विशेष या क्षेत्र उस देश या क्षेत्र का मेहनतकश मजदूर-किसान कमजोर और असंगठित होता है और यह समाज वर्गीय चेतना के अभाव में तानाशाही के भुलावे में आ जाता है। ठीक इसके विपरीत यदि उस देश या क्षेत्र की उत्पादक शक्तियाँ यानी मेहनतकश यदि मजबूत संगठित और वर्गीय चेतना से लैस हों तो साम्राज्यशाही समाजवाद के लिए पुल का काम करने को मजबूर होती है। लेकिन उचित संगठन के रास्ते में ही नई राह बनाती है।

जरूरी होने के बावजूद फिलहाल मैं फासीवाद के उदय, उत्थान और पतन के विश्लेषण में नहीं जा पा रहा हूँ, सिर्फ इतना कह देना चाहता हूँ कि 20 वीं सदी के आरम्भ में जब प्रतियोगी पूंजी साम्राज्यवादी पूंजी की तरफ बढ़ रही थी तो उसके साथ ही उस समय की राजनीति, अर्थनीति और संस्कृति की कोख से एक तरफ तो फासीवाद आकार ले रहा था तो दूसरी तरफ मार्क्सवाद का व्यावहारिक संघर्ष मुख्यतौर पर रूस में सर्वहारा क्रान्ति की तरफ बढ़ रहा था और इटली में फासीवाद का उदय हो रहा था, जर्मनी की तरफ भी जाना जरूरी है जहाँ मजदूर संगठन की हलचलें जारी थीं और वह उन्नत पूंजीवादी देश के रूप में जाना जाता था।

प्रथम महायुद्ध 1914 से 1919 तक चलता है उसी बीच 1917 में अक्टूबर सर्वहारा क्रान्ति होती है। शायद लोग भूलते जा रहे हैं कि इटालियन फासीवादी तानाशाह मुसोलिनी ने रूस की अक्टूबर बोल्शेविक क्रांति की आरम्भ में प्रशंसा की थी किन्तु जब लेनिन ने अन्तराष्ट्रीयतावाद की दिशा ली तो मुसोलिनी का राष्ट्रवाद यों कहें कि चरम राष्ट्रवाद के सोच-विचार को धक्का लगा और वह लेनिन तथा बोल्शेविक शासन के खिलाफ हो गया यहाँ तक कि उसने लेनिन की तुलना जार से कर डाली। 1919 में जब इटली की फासीवादी पार्टी का घोषणा पत्र सामने आया तो उसमें मजदूर यूनियन और औद्योगिक शार्क दोनों के साथ के नारे दिए जो मार्क्सवादी दृष्टिकोण यानी विपरीत वर्गों के द्वंद्वात्मक अंर्तविरोध के खिलाफ था। काल-सापेक्ष यह लगभग वैसा ही था जैसे कि भारतीय फासीवादी तानाशाह नरेन्द्र मोदी 'सबका साथ सबका विकास' जैसी अवैज्ञानिक बातें वर्ग विभाजित भारतीय समाज के सामने फेंके जा रहे हैं। प्रधानमंत्री जनधन योजना से लेकर विमुद्रीकरण तक को वे इस तरह से पेश करते हैं जैसे उनके इस कारनामे से साधारण जन यानी मेहनतकश मजदूर किसान तबकों को वे लाभ पहुँचाने जा रहे हैं। वे कहते हैं कि कालेधन पर लगाम लगा रहे हैं भ्रष्टाचार के मूल मेहनतकश के के शोषण पर चोट किए बिना भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए डिजिटल भुगतान को बढ़ावा दे रहे हैं। दरअसल प्रधानमंत्री जनधन योजना का खाता खोलवाकर प्रधानमंत्री ने देश के आखिरी आदमी की जेब पर डाका डाला और उससे बड़ा डाका उन्होंने 8 नवम्बर 2016 के अपने विमुद्रीकरण एलान के जरिए डाला और देश के लोगों की आम जिंदगी के लिए जमा धनराशि को बैंक में जमा करने के लिए मजबूर किया। इस तरह अपने इस कारखाने से वे लोगों को कमजोर कर रहे हैं, बैंक और वित्तीय पूंजी को मजबूत कर रहे हैं, राज्यसत्ता को मजबूत कर रहे हैं, तथाकथित जनतांत्रिक संस्थानों को निष्क्रिय बनाते जा रहे हैं और अन्य तमाम मामलों में एक आदमी का फैसला यानी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का फैसला पूरे देश पर थोपा जा रहा है किन्तु सोशल मीडिया से लेकर कॉरपोरेट घरानों के इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया पर उनका प्रचार ही छाया रहता है। अब तक जिन पार्टियों ने शासन किया है उन्हें कालेधनवालों की पार्टी साबित करने में सफल

ISSN : 2454-2121
R.N.I. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regn. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

मूल्य : 5.00
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

हो रहे हैं और साधारण जन से लेकर बुद्धिजीवी समाज तक उनके भुलावे में आ गया है। जाहिर सी बात है कि मुसोलिनी के बाद हिटलर ने भी मजदूरों को बरगला कर अपने पक्ष में किया ठीक उसी तरह यदि भारत में कम्युनिष्ट एकता बनी तो नई सर्वहारा क्रांति के साथ ही मोदी की फासीवादी तानाशाही को परास्त किया जा सकता है। यही एक रास्ता है जिसके लिए साइबरटारियन, टेक्निकल मैनेजेरियल तबका और धरती में अंतरिक्ष तक सभी मेहनतकशों को एकजुट होकर मोदी तानाशाही को उखाड़ फेकना होगा कि सबका साथ, सबका विकास और अच्छे दिन के झासे में पड़े रहना होगा।

फासीवाद विरोधी बुद्धिजीवियों से अपील करता हूँ कि वे अपनी भूमिका खुद तय करें।

–शिवमंगल सिद्धांतकर
संपर्क : 9810400430,
011-2526971
ईमेल : sheomanga11@yahoo.co.in

सूचना और प्रसारण मंत्री ने चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी समारोह के अवसर पर तीन विरासत पुस्तकों का विमोचन किया

सूचना और प्रसारण मंत्री श्री एम. वेंकैया नायडू ने कहा कि महात्मा गांधी ने 'युवा मन' को मानवता, उदारता और दृढ़ संकल्प का अमूल्य पाठ सिखाया है। इससे आगामी पीढ़ी को उनके दर्शन 'मेरा जीवन, मेरा संदेश' के सार को समझने का अवसर मिला है। युवा पीढ़ी को हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्वाधीनता सेनानियों द्वारा किये गये सर्वोच्च बलिदान की भावना और उनकी अभिलाषा को समझना चाहिए। मंत्री महोदय ने यह बात राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली के सहयोग से प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित विरासत पुस्तक 'गांधी इन चम्पारण' के विमोचन के अवसर पर कही। इस अवसर पर राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय की अध्यक्ष सुश्री अर्पणा बासु और मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

पुस्तक 'गांधी इन चम्पारण' के प्रकाशन से समकालीन पाठकों को स्वाधीनता के लिए भारतीय संघर्ष के उस महत्वपूर्ण चरण के बारे में पता चलेगा। इस पुस्तक का उद्देश्य गांधीजी पर गहरा प्रभाव छोड़ने वाले और कैसे इस घटना ने हमारे राष्ट्र के इतिहास की दिशा को बदला था, उस अनुभव को पुन: लिखना, याद करना और उन्हें दोबारा बताना है।

मंत्री महोदय ने प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित डी.जी. तेंदुलकर लिखित दो अन्य पुस्तकों 'रोमैन रोलैंड एंड गांधी कॉरसपोन्डैंस' और 'महात्मा शृंखला (8 संस्करण) का भी विमोचन किया। 'रोमैन रोलैंड एंड गांधी कॉरसपोन्डैंस' पुस्तक पत्रों का संकलन है, इसमें रोमैन रोलैंड के महात्मा गांधी के साथ और उनके बारे में लेख तथा उनकी एवं महात्मा गांधी की डायरियों के अंश के साथ ही कुछ अन्य लेख भी हैं। पुस्तक 'महात्मा शृंखला (8 संस्करण)' महात्मा गांधी की जीवनी है, जिसकी कल्पना और लेखन बापू के जीवन काल के दौरान ही डी.जी. तेंदुलकर ने की थी, जिसे लेखक ने ही संशोधित संस्करणों में संरक्षित किया है और 60 के दशक के शुरुआत में प्रकाशन विभाग द्वारा इसे प्रकाशित किया गया था।

ये सभी संरक्षित पुस्तकें 1950 और 1960 में प्रकाशित की गई थीं और इनमें स्वाधीनता संग्राम के बारे में सबसे अधिक प्रामाणिक विवरण दिया गया है।

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी सोनिया शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37 ए, बेंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-700137, 24 Pgs. (S), W.B. India से प्रकाशित । **संपादक : जितेन्द्र जितांशु**
☎: 9231845289, 2470-4061, E-mail : jjitanshu@yahoo.com, R.N.I. No. WBHIN/2000/1974